'राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

समाचार गेट

TITLE CODE : HARHIN11569

वर्ष 01, अंक 199 पृष्ठ 08 मूल्य 01 रूपए शुक्रवार, 04 अक्टूबर 2024 samachargate@gmail.com

कांग्रेस प्रत्याशी लखन सिंगला के रोड शो में उमड़ा लोगों का हजूम
Page 3

नायब सिंह सैनी पहुंचे विपुल के रोड शो में, की वोट की अपील

पूरी ईमानदारी एवं मेहनत से जनता की सेवा करेंगे विपुल: कृष्णपाल गुर्जर

5 अक्टूबर को इस विकास यात्रा को नई ऊंचाई पर ले जाने का काम करें: विपुल गोयल

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी विपुल गोयल ने रविवार को ओल्ड फरीदाबाद में रोड शो निकाला जिसमें हजारों की तादाद में लोग शामिल हुए। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी रोड शो में विपुल गोयल के लिए वोट मांगने पहुंचे। लोगों ने नायब सिंह सैनी को तलवार, चांदी के मुकुट एवं गदा भेंट कर उनका स्वागत किया। उनके साथ इस रोड शो में केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर, तिगांव प्रत्याशी राजेश नागर, चन्द्र भाटिया, प्रवेश मेहता, किशन ठाकुर व अन्य लोग शामिल हुए।

रोड शो के दौरान लोगों को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने विपुल गोयल के समर्थन में वोट डालने की अपील करते हुए कहा कि हरियाणा में तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने जा रही है और विपुल गोयल रिकॉर्ड मतों से फरीदाबाद विधानसभा सीट से जीत हासिल करेंगे। उन्होंने क्षेत्र के मतदाताओं से अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने की अपील करते हुए विपुल गोयल को विजयी बनाकर चंडीगढ़ भेजने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि पिछले दस वर्षों भारतीय जनता पार्टी ने द्वारका एक्सप्रेस वे, मुंबई एक्सप्रेस वे, नेशनल हाईवे हरियाणा को दिए। उन्होंने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस का एक ही सिद्धांत है 'झूठ बोलो और राज करो'। आज राहुल गांधी मोहब्बत की दुकान लेकर हरियाणा की यात्रा पर आए हैं। इनकी मोहब्बत की दुकान में नौकरियों से लेकर घोटाले तक सब बिकते हैं। कांग्रेस के नेता अपने परिवार का घर भरने और हरियाणा को लूटने के लिए आते हैं। इसलिए इनसे बचने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने पर गैस सिलेंडर 500 रुपए में, माता-बहनों को 2000 रुपए सम्मान राशि, आयुष्मान कार्ड से इलाज 10 लाख रुपए तक का एवं बिना खर्ची-पर्ची के बिना भेदभाव के प्रदेश के सवा दो लाख युवाओं को रोजगार देने का काम भाजपा की डबल इंजन सरकार करेगी।

केन्द्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने इस मौके पर फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र की जनता से अपील करते हुए कहा कि आने वाली 5 तारीख को कमल का बटन दबाकर विपुल गोयल को भारी मतों से विजयी बनाएं। उन्होंने कहा कि विपुल गोयल और हम बहुत पुराने साथी हैं। वह पूरी ईमानदारी एवं मेहनत से जनता की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विपुल गोयल के नेतृत्व में हमारा क्षेत्र सही दिशा में आगे बढ़ेगा। इस चुनाव में हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारी एकजुटता है। यह चुनाव सिर्फ एक सीट की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह हमारे प्रधानमंत्री की विकसित भारत की सोच मजबूत बनाने का एक मौका है। कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि इस बार फरीदाबाद की 9 में से 9 सीटें भारतीय जनता पार्टी जीतेगी। फरीदाबाद की जीत हरियाणा की नंबर 1 जीत होगी।

इस अवसर पर विपुल गोयल ने लोगों से अपील की, कि अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए, अपने भविष्य को ध्यान में रखकर अपना वोट भारतीय जनता पार्टी को वोट दें। जिस समय का आप पिछले 5 वर्ष से इंतजार कर रहे वह समय आ गया है। भारतीय जनता पार्टी ने मुझे फरीदाबाद विधानसभा की सेवा करने के लिए चुना है।

मेरे पिछले 5 वर्षों का कार्यकाल आप सभी ने देखा, केन्द्र की मोदी और प्रदेश में नायब सिंह सैनी की डबल इंजन सरकार का कार्यकाल भी आपने देखा। 5 अक्टूबर को इस विकास यात्रा को एक नई ऊंचाई पर ले जाने का अवसर आपके पास है। आपका एक-2 वोट फरीदाबाद के भविष्य की दिशा और दशा तय करेगा। इसलिए आने वाली 5 तारीख को बैलेट नं.4 पर कमल के सामने वाला बटन दबाकर मुझे अपना आशीर्वाद दें और फरीदाबाद के विकास, प्रगति और उज्जवल भविष्य में सहयोग करते हुए भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड बहुमत से विजयी बनाएं।

राव राम कुमार ने संकल्प पत्र जारी कर बल्लभगढ़ के विकास का वादा किया

राव राम कुमार ने बल्लभगढ़ की सड़कों, स्वास्थ्य सेवाओं, महिला सुरक्षा और युवाओं के रोजगार के लिए विशेष योजनाओं का वादा किया

जल निकासी, सीवर समस्याओं का समाधान, सरकारी स्कूलों का उन्नतिकरण, और 2437 विधायक हेल्पलाइन के माध्यम से त्वरित समाधान की घोषणा की

पूर्व पार्षद के तौर पर किए गए कार्यों का हवाला देते हुए, उन्होंने विधायक बनने पर और तेज़ी से विकास कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। गुरुवार को बल्लभगढ़ विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी राव राम कुमार के मोहना रोड कार्यालय पर प्रेस वार्ता हुई। जिसमें बल्लभगढ़ विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी राव राम कुमार, पूर्व पार्षद कमल यादव और निवर्तमान पार्षद दीपक यादव उपस्थित रहे।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए, राव राम कुमार ने कहा मुझे 2010 में पार्षद बनने का अवसर मिला था, और उस दौरान मैंने अपने क्षेत्र में कई विकास कार्य किए हैं। अब, अगर मुझे बल्लभगढ़ क्षेत्र से विधायक बनने का मौका मिलता है, तो मैं जनता के और भी बड़े मुद्दों को हल करने के लिए पूरी तत्परता से काम करूंगा।

उन्होंने अपने संकल्प पत्र के निम्नलिखित बिंदुओं का भी विवरण दिया ।

1. मैं बल्लभगढ़ की सड़कों को सुधारने और उनका उन्नतिकरण करने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।

2. हर नागरिक को मुफ्त और उच्चतम स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएं दिलवाने के लिए काम करूंगा, और महिला सुरक्षा को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दूंगा।

3. मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि हर नागरिक को सभी सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ मिले।

4. बल्लभगढ़ के युवाओं के रोजगार के लिए नए उद्योगों को लाने की योजना है, जिससे नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

5. मैं क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या, सीवर की समस्या को जल्द से जल्द हल करूंगा।

6. जल निकासी व्यवस्था में सुधार के लिए भी ठोस कदम उठाए जाएंगे।

7. सरकारी स्कूलों को आधुनिक शिक्षा के लिए उन्नत किया जाएगा, और डिजिटल पुस्तकालय की सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

8. मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि सभी घरों को 24 घंटे बिजली की आपूर्ति हो और बिजली की समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो।

9. बल्लभगढ़ के युवाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर का खेल स्टेडियम बनाया जाएगा, जिससे खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा।

10. मैं सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार को पूरी तरह समाप्त करूंगा, ताकि जनता को ईमानदार और पारदर्शी सेवा मिल सके।

11. जनता की हर समस्या के त्वरित समाधान के लिए मैं 2437 विधायक हेल्पलाइन स्थापित करूंगा, जिससे 24 घंटे के भीतर हर समस्या का समाधान हो सके।

बिंदुओं को महत्व देते हुए उन्होंने आगे कहा पार्षद के रूप में मैंने समाज के लिए बहुत काम किया है, और अब अगर मुझे विधायक बनने का अवसर मिलता है, तो क्षेत्र में और अधिक विकास कार्यों को तेजी से पूरा करूंगा। मेरी पॉवर बढ़ेगी, तो डेवलपमेंट भी उसी गति से होगा। जनता की सेवा के लिए मैं हमेशा तैयार हूं।

कांग्रेस सरकार बनी तो पृथला क्षेत्र में भी शहरी तर्ज पर होगा विकास: लुकमान रमीज

रघुबीर तेवतिया के लिए प्रचार के आखिरी दिन, वकील हुए एकजुट, लोगों से मांगा समर्थन

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। चुनाव प्रचार के आखिरी दिन पृथला विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक रघुबीर तेवतिया को समर्थन देते हुए कांग्रेस के जोनल अध्यक्ष माइनोरिटी डिपार्टमेंट हरियाणा प्रदेश एवं कोर्डिनेटर हरियाणा प्रदेश जिला मेवात प्रभारी ओबीसी सेल लुकमान रमीज ने भाजपा सरकार पर ग्रामीण विकास के साथ भेदभावपूर्ण नीति अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले दस सालों में पूर्णरूप से देहात पृष्ठभूमि के क्षेत्र पृथला के साथ विकास व रोजगार के मामले में भेदभावपूर्ण नीति अपनाई गई है। यही कारण रहा है कि यह क्षेत्र विकास व रोजगार के मामले में पूरी तरह से पिछड़ गया है। इसलिए अब समय आ गया है कि जब ऐसे दोमुंही राजनेताओं को वोट की चोट से सबक सिखाएं। उन्होंने लोगों को आश्वास्त किया कि हरियाणा में कांग्रेस की सरकार बनना तय है और अगर लोगों ने उन्हें विधायक बनाकर विधानसभा में भेजा तो सरकार बनते ही फिर से पृथला क्षेत्र को विकास, रोजगार व भाईचारे की भावना को बढ़ाते हुए यहां ईमानदारी से जनसेवा की जाएगी। कांग्रेस प्रत्याशी तेवतिया गुरूवार को अपने चुनावी अभियान के तहत पृथला क्षेत्र के गांव सीकरी में लुकमान रमीज द्वारा आयोजित चुनावी जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस सभा में जुटी भारी भीड ने चुनावी सभा को ही रैली का रूप दे दिया है। रघुबीर तेवतिया ने कहा कि असली भारत गावों में ही बसता है और इसी सोच को सार्थक करते हुए कांग्रेस पार्टी ने सदां गावों का विकास भी शहरी तर्ज पर किया था। और ग्रामीण आंचल को भी विकास की मुख्यधारा से जोडने का काम किया था। इस मौके पर उनका फूलमालाओं व पगडी बांधकर स्वागत और सम्मान कर विजयी आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता लुकमान रमीज के साथ गुलाब रावत, टीका डागर, रविंद्र अहलावत, स्वराज रावत, अक्षय कौशिक, अनुज नागर सहित दर्जनों कार्यकर्ता एवं समर्थक मौजूद रहे।

पृथला में ईमानदारी, विकास और रोजगार के लिए कांग्रेस को दें वोट: रघुबीर तेवतिया

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। पृथला विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक रघुबीर तेवतिया ने चुनाव प्रचार के आखिरी दिन बृहस्पतिवार को पृथला क्षेत्र में जोरदार दस्तक देते हुए पृथला में सता परिवर्तन का दावा किया। उन्होंने विरोधियों पर वार करते हुए कहा कि पृथला का यह चुनाव शराफत, ईमानदारी, विकास और रोजगार पर आधारित है। यहां के लोग इस बार भ्रष्टाचार व जुम्लेबाजी पर वोट की चोट से करारा जवाब देंगे। उन्होंने कहा कि एक बार फिर से भाजपाईयों ने लोगों को धर्म के नाम पर बांटकर जुम्ले फैंके हैं लेकिन आपको इन्हें अपनी वोट की ताकत का एहसास कराना है। कांग्रेस प्रत्याशी रघुबीर तेवतिया पृथला क्षेत्र के गांव दयालपुर व मोहना में आयोजित चुनावी सभाओं को संबोधित कर रहे थे। सभाओं में हजारों लोगों की मौजूदगी ने चुनावी सभाओं को ही बडी रैली का रूप दे दिया। वहीं इस मौके पर उनका बडी माला से जोरदार स्वागत किया गया तथा उपस्थित लोगों ने दोनों हाथ उठाकर अपने खुले समर्थन रूपी आशीवाद का भी ऐलान भी किया। उन्होंने कहा कि सभाओं में उमड रहे लोगों के समर्थन ने साफ कर दिया है कि पृथला की जनता बदलाव चाहती है। हर नुक्कड़ सभा में जनता ने कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा और समर्थन व्यक्त किया।

यह समर्थन बीजेपी सरकार की विफलताओं के खिलाफ गुस्से और कांग्रेस के प्रति जनता के विश्वास का प्रतीक है क्योंकि बीजेपी सरकार ने पृथला की जनता को सिर्फ वादे दिए, लेकिन उन वादों पर कभी खरा नहीं उतरी। उन्होंने लोगों को आश्वासा किया कि हरियाणा में कांग्रेस की सरकार बन रही है और जनता के आशीवाद से विधायक बनकर उनका पहला लक्ष्य पृथला क्षेत्र को फिर से विकास व रोजगार में प्रधानता दिलाना रहेगा।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का 80 फुट की फूलों की माला से स्वागत

समाचार गेट/सुमित गोयल

बल्लबगढ़। बल्लभगढ़ की ऐतिहासिक नगरी में बल्लबगढ़ से भाजपा प्रत्याशी मूलचंद शर्मा के पक्ष में रोड शो में शामिल हुए देवभूमि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का हरियाणा की 80 फुट की सबसे बड़ी फूलों की माला से जोरदार स्वागत किया गया। वही रोड शो के दौरान भारी जन सैलाब देखने को मिला डंपरो में भरे हुए फूल बरसा कर जोरदार स्वागत किया गया। इस रोड शो में उत्तर प्रदेश के सांसद महेश शर्मा,पूर्व मंत्री और भाजपा से फरीदाबाद के प्रत्याशी विपुल गोयल और पूर्व विधायक चंदर भाटिया मुख्य रूप से शामिल हुए।

देवभूमि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि हरियाणा के लोग फिर से तीसरी बार हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हरियाणा में फिर से डबल इंजन की तीसरी बार सरकार बनाने जा रहे हैं, मैंने पूरे हरियाणा के अंदर जाने के बाद कह रहा हूं कि जगह-जगह लोगों के अंदर उत्साह है उन्हें देखा है कि 10 साल में शिक्षा के क्षेत्र में स्वास्थ्य के क्षेत्र में कानून व्यवस्था क्षेत्र में रोड की कनेक्टिविटी के क्षेत्र में जैसे हर क्षेत्र में काम हुआ है । वही लोगो ने 2004 से 2014 के बीच में कांग्रेस की सरकार रही भ्रष्टाचारी, परिवारवादी, जातिवादी सरकार और पर्ची खर्ची सिस्टम को भी देखा है जबकि भाजपा सरकार ने पर्ची खर्ची सिस्टम और भ्रष्टाचार को खत्म करने का काम किया है।

भाजपा ने 10 सालों में जो हरियाणा में काम हुआ है विकास की बुलंदियों को छुआ है तो विकास कर्म रुकेगा नहीं विकास के कर्म को हरियाणा के लोग आगे बढ़ाएंगे और हरियाणा में तीसरी बार डबल इंजन की सरकार बनेगी। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित सभी नेताओं ने महाराजा अग्रसेन और संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माला अर्पण किया। इसके उपरांत उन्होंने शहीद राजा नाहर सिंह जी की प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नमन किया। बाजार में व्यापारियों द्वारा जगह-जगह नेताओं का समृती चिन्ह और फूलमालाओं द्वारा स्वागत किया गया।

प्रत्याशी मूलचंद शर्मा ने कहा कि हरियाणा में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है, उन्होंने कहा कि बल्लभगढ़ में आज आयोजित रोड शो में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी पहुंचे और भव्य रोड शो के माध्यम से उनके पक्ष में लोगों से वोट की अपील की है। मूलचंद शर्मा के कहा की शहर बल्लभगढ़ की देव तुल्य जनता का रोड शो में उन्हे पुरा समर्थन और प्यार मिला है उनका कहना है की बल्लभगढ़ की जनता बल्लभगढ़ के विकास पर अपनी मोहर लगाने जा रही है।

श्री शर्मा ने रोड शो को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद किया।। इस मौके पर जिला अध्यक्ष राजकुमार बोहरा, मूलचंद मित्तल प्रभारी बल्लभगढ़ विधानसभा, पूर्व जिला अध्यक्ष गोपाल शर्मा, चेयरमैन हुकम सिंह भाटी सहित भाजपा के सभी ज्येष्ठ और श्रेष्ठ कार्यकर्ता पदाधिकारी और बल्लभगढ़ की हजारों की संख्या में देव तुल्य जनता मौजूद रही।

आठ अक्टूबर को भाजपा की हैट्रिक लगाना तय: भजनलाल शर्मा

सिवानी सोनिका सूरा

लोहारु/ ढिगावा। राजस्थान की मुख्यमंत्री व भाजपा के स्टार प्रचारक प्रचार ने लोहारु विधानसभा के गांव कुड़ल में भाजपा प्रत्याशी एवम पूर्व वित्तमंत्री जेपी दलाल के पक्ष में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि भाजपा किसान व गरीब कल्याण की अनेक योजनाओ लागू की है। प्रदेश व देश हित मे लागू की गई अनेक कल्याणकारी नीतियों की बदौलत 8 अक्टूबर को आने वाले चुनाव परिणाम से हरियाणा में हैट्रिक लगाना तय है। उन्होने कहा कि कांग्रेस पार्टी को देश प्रदेश के विकास और किसान, गरीब, मजदूर, महिला व युवाओ के कल्याण से कोई वास्ता नही है। कांग्रेस पार्टी इन्दिरा गांधी से लेकर राहुल तक तीन पीढ़ियों ने गरीबी हटाने के नारे के बहाने देश को जमकर लुटा है। भाजपा के मैरिट से नोकरिया देने से आस पास अनेक लाइब्रेरी बनी है इनको बनी रहने के भाजपा का रहना जरूरी है। भाजपा के दस वर्ष के शासनकाल में हर वर्ग की भलाई के लिए कार्य किया है कांग्रेस का दस साल का शासनकाल ओर भाजपा के दस साल के शासनकाल में दिन रात का फर्क है। कांग्रेस के कल में जमीन ,आकाश, पाताल के घोटाले होते थे। राजस्थान में सरकार के आठ के कार्यकाल में 50 प्रतिशत वायदे पूरे कर दिए है। उन्होंने कहा कि जेपी दलाल जो मेरा मित्र है को सबसे अधिक मतो से जीता दो भाजपा भी दलाल को बड़ा पद देगी। भाजपा प्रत्याशी एवम पूर्व वित्तमंत्री जेपी दलाल ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कांग्रेस के गुबारे में किसानों से छेद कर दिया है। इसलिए निश्चित तौर पर तीसरी बार भाजपा की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि लोहारु को हरियाणा का ही नही बल्कि पूरे देश मे सर्वश्रेष्ठ हल्का बनाने का काम करूंगा। लोहारु से दिल्ली हाइवे का निर्माण कर दिल्ली के कारखाने लोहारु ओर सिवानी में लगावाने का काम करूंगा। कार्यक्रम को सांसद डीपी वत्स, विराट नगर के विधायक कुलदीप धनखड़, वरुण श्योराण, बजरंग लाल शर्मा, राजबाला श्योराण, सन्दीप बुधेडा, रामशरन बिठान, आत्माराम आदि नेताओं नेभी सम्बोधित किया और भाजपा की कल्याण कारी नीतियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में हजारों पार्टी कार्यकर्ता, पदाधिकारी, किसान,आमजन व बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रही।

चुनाव प्रचार के आखरी दिन चौधरी ताहिर हुसैन ने दिखाई ताकत, विधानसभा के लोगों ने बैठाया पलकों पर

(अनिल मोहनियां नूंह)

बृहस्पतिवार को नूँह विधानसभा से इनेलो-बसपा के प्रत्याशी चौधरी जाकिर हुसैन ने अपनी ताकत दिखाते हुए नूंह बार एसोसिएशन जाकर वकीलों से वोट की अपील की। उसके बाद बीबीपुर मोड़ से करीब 16 गांवों के लोग उन्हें रोड शो के द्वारा अलावलपुर वाया देवला नंगली तक लेकर पहुंचे। आलवलपुर में बड़ी सभा को संबोधित किया। रास्ते में हर जगह उनका जोरदार स्वागत हुआ। मां बहनों ने भी ताहिर हुसैन जिंदाबाद के नारे लगाए। गाँवों की सरदारी ने चौधरी ताहिर हुसैन को पलकों पर बैठाने का काम किया। गाँव की सभी महिलाओं ने भी ताहिर हुसैन को दुआएँ दीं।

चौधरी ताहिर हुसैन ने सभी ग्रामवासियों का अभिवादन व शुक्रिया किया।ः उन्होंने कहा कि उन्होंने अपनी पुरी जिंदगी में इतना प्यार, इतनी मोहब्बत, इतना शानदार स्वागत कभी नहीं देखा। ग्राम वासियों ने उन्हें हमेशा के लिए अपना कर्जदार बना दिया है। उन्होंने कहा कि नूँह विधानसभा में मिल रहे प्यार और समर्थन का समय आने पर इंशा अल्लाह इसका कर्ज जरूर चुकाऊँगा।

ताहिर हुसैन ने कहा कि आज नूँह विधानसभा का युवा जाग चुका है। हर मतदाता उठ चुका है। कांग्रेस सरकार व कांग्रेसी विधायक के जुल्मों से परेशान हैं। उनके भ्रष्टाचार से नूँह विधानसभा की जनता ऊब चुकी है। उन्होंने कांग्रेसी विधायक पर जमकर हमला बोलते हुए कहा कि इनका पाप का घड़ा भर चुका है। इन्हें नूँह की जनता हमेशा के लिए यहाँ से विदा करने वाली है।

उन्होंने कहा कि हर जगह लोगों का इतना प्यार व समर्थन मिल रहा है कि हर कार्यक्रम में देरी से पहुंच रहे हैं। लोग बेसब्री से स्वागत के लिए इंतजार कर रहे हैं। आप लोगों के जोश ने विपक्षियों की नींद उड़ा दी है। मुझे व मेरे परिवार को आप लोगों ने मरहूम चौधरी मोड्ड यासीन खाँ व मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन अपार प्यार व जनसमर्थन दिया है। ईंशा अल्लाह चुनाव तो आप रिकार्ड मतों से जीत रहे हैं, पर ये जोश हमें आगामी 5 अक्तूबर तक बरकरार रखना है। हमें ऐसे ही दिन-रात कार्य करते रहना है। ईंशा अल्लाह आप लोग रिकार्डतोड़ वोटों से वहा से जीत रहे हैं। ताहिर हुसैन ने कहा कि ये आप लोगों का चुनाव है। युवाओं के उज्जवल भविष्य का चुनाव है। नूँह विधानसभा के हर मतदाता का स्वयं का चुनाव है। आज हर मतदाता ताहिर हुसैन बनकर चुनाव लड़ रहा है। आज शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को दुरूस्त करने का चुनाव है। हर नौजवान साथी इन समस्याओं से जूझ रहा है। उन्होंने कहा कि अगर नूँह की जनता ने विधानसभा भेजा तो युवाओं के रोजगार व क्षेत्र के विकास के लिए दिन-रात प्रयास करेंगे। भ्रष्टाचार व जुल्म को यहाँ से जड़ से मिटाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि मेरा हर कार्यकर्ता आपने आप में ताहिर हुसैन है। कोई भी साथी अपने आप को अकेला महसूस ना करे। ताहिर हुसैन हर समय नूंह विधानसभा की जनता जनार्दन के साथ है। मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन के दिखाए हुए रास्ते पर चलकर हम 36 बिरादरी के मान-सम्मान की लड़ाई लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि एक बार विधायक बना दो, आप लोगों की 5 साल बेटे और भाई की तरह सेवा करूंगा। आपकी परछाई बनकर काम करूंगा। उन्होंने कहा कि मेरे किसी भी कार्यकर्ता को कभी मायूस होने की जरूरत नहीं है। मैं हमेशा आप लोगों की परछाई बनकर आप लोगों के साथ खड़ा हूँ। आप लोगों का सुख-दुख मेरा सुख-दुख है। आप लोगों का जहाँ पसीना बहेगा, वहाँ पर आपका यह भाई और बेटा खून बहाने से भी पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा कि इस अपार जनसमर्थन, दुआओं व असीम प्रेम का हमेशा मेवात की 36 बिरादरी का कर्जदार रहूँगा। उन्होंने कहा कि इंशा अल्लाह सही वक्त आने पर आप लोगों द्वारा बहाए गए पसीने की एक-एक बूँद का कर्ज चुकाऊँगा। ताहिर हुसैन ने कहा कि प्रदेश में इनेलो-बसपा गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। इनेलो सुप्रीमों चौधरी ओमप्रकाश चौटाला व चौधरी अभय सिंह चौटाला को मेवात क्षेत्र की हमेशा फिक्र रहती है। स्वः चौधरी देवीलाल परिवार का मेवात क्षेत्र से विशेष लगाव है।

राहुल गांधी, हुड्डा ने मांगे आफताब सहित सभी कांग्रेस प्रत्याशियों के लिए वोट

(अनिल मोहनियां नूंह)

चुनाव प्रचार के अंतिम दिन दक्षिण हरियाणा की हॉट सीट नूंह पर देश के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कांग्रेस प्रत्याशी आफताब अहमद के लिए प्रचार करने पहुंचे। नूंह जिले की अन्य दो सीटों पुनहाना से मोहम्मद इलियास, फिरोजपुर झिरका से मामन खान इंजीनियर के अलावा हथीन से कांग्रेस प्रत्याशी मोहम्मद इसराइल कोट के लिए भी वोट की अपील की। कांग्रेस दिग्गज राहुल गांधी के अलावा, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, कांग्रेस संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, पूर्व सांसद राज बब्बर विशेष रूप से मौजूद थे। नूंह मेवात की जनता की तरफ से नूंह प्रत्याशी आफताब अहमद ने राहुल गांधी को पगड़ी बांधकर सम्मानित किया। अलग अलग हेलीकॉप्टरों में नूंह पहुंचे राहुल गांधी और भूपेंद्र सिंह हुड्डा का मेवात की तरफ से आफताब अहमद ने हेलीपेड पर स्वागत और रिसीव किया। नूंह से कांग्रेस प्रत्याशी आफताब अहमद ने कहा कि मेवात शहीदों, वीर बहादुरों की सरजमीं है, राहुल गांधी भी दो शहीद पूर्व प्रधानमंत्रियों के वंशज हैं। मेवातियों व राहुल गांधी की विचारधारा एक है और लक्ष्य भी एक है कि समाज में कोई भेदभाव ना हो, असमानता ना हो, सभी मिलजुलकर सांप्रदायिक सद्भाव के साथ मिलकर विकास के रास्ते पर आगे बढ़ें। आफताब अहमद ने राहुल गांधी का धन्यवाद करते हुए कहा कि वो इलाके सहित पूरे प्रदेश और देश की लड़ाई लड़ रहे हैं जिसमें पूरी मेवात उनकी विचाराधारा के साथ खड़ी है। कांग्रेस प्रत्याशी आफताब अहमद ने राहुल गांधी, भूपेंद्र सिंह हुड्डा की मौजूदगी में मंच से कहा कि कांग्रेस के दस सालों में यहां काफी विकास हुआ लेकिन बीजेपी के बीते दस सालों में कोई विकास नहीं हुआ उसकी भरपाई के लिए यहां पर पिछली हुड्डा सरकार की तुलना में दोगुना विकास अगली कांग्रेस सरकार में होना चाहिए। आफताब अहमद ने नूंह में विश्वविद्यालय, किसानों को सिंचाई के लिए पूरा और साफ पानी, स्थानीय युवाओं को रोजगार, शिक्षा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, पर्याप्त पीने का स्वच्छ पानी, बिजली आपूर्ति आदि की मांग की। इसके साथ साथ उन्होंने राहुल गांधी से इलाके के पूरे मान सम्मान देने की भी मांग रखी।

आफताब अहमद ने राहुल गांधी को आश्वस्त किया कि ना केवल नूंह जिले बल्कि पड़ोस के जिलों की सीटों को भी जिताने का भरोसा दिलाया। वहीं भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि कांग्रेस सरकार में मेवात में खूब विकास के कार्य हुए थे लेकिन भाजपा सरकार ने बीते

दस सालों में कोई विकास नहीं किया। समाज को बांटने के अलावा कोई काम नहीं किया। उन्होंने कहा कि 2014 में विकास में नंबर वन हरियाणा प्रति व्यक्ति आय में, निवेश में, रोजगार, खेल खिलाड़ियों में नंबर एक था लेकीन दस सालों में बीजेपी सरकार ने प्रदेश को बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार में नंबर एक बना दिया, कानून व्यवस्था चरमरा गई है, अर्थव्यवस्था खराब हो गई। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा ने कहा कि देश की आजादी में मेवातियों का अहम योगदान रहा है और यहां के लोगों ने अपनी जान की बाजी लगाकर मुगलों, अंग्रेजों से लड़ाईयां लड़ी। यहां का भाईचारा शदियों से एक उदहारण रहा है। बहुत सारे प्रयास बीजेपी सरकार ने यहां लोगों को लड़ाने के किए लेकिन यहां के अटूट भाईचारे को वो डिगा नहीं सके।

वहीं नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि नूंह के कांग्रेस कार्यकर्ता शेर और शेरनी हैं जो एक साथ रहते हैं और वो नफरत का मोहब्बत से जवाब देता है। जहां जहां बीजेपी ने नफरत का बाजार खोला वहां वहां कांग्रेस ने मोहब्बत की दुकान खोली। उन्होंने कहा कि इस देश के गरीब, मजदूर, गरीब, किसान, आम जनता को जो भी ताकत मिली वो बाबा भीम राव अम्बेडकर और महात्मा गांधी के दिए संविधान से मिली है अगर बीजेपी ने इसे खत्म कर दिया तो सब कुछ 2 दर्जन अमीर लोगों के हाथ चला जाएगा और गरीब व आम जन के हाथ कुछ नहीं बचेगा। राहुल गांधी ने कहा कि हरियाणा में बेरोजगारी, मंहगाई, भ्रष्टाचार चर्म पर है और यहां के युवा दूर दराज के मुल्कों में कर्ज लेकर जाने को विवश हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार बनने पर यहां दो लाख रिक्त पदों को भरकर स्थानीय लोगों को रोजगार देंगे और ये रोजगार सभी को समान रूप से बिना भेदभाव दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हरियाणा में कांग्रेस सरकार बनने पर बुजुर्गों, विकलांग, विधवाओं को छह हजार रुपये मासिक सामाजिक सुरक्षा पेंशन देने, तीन सौ यूनिट मुफ्त बिजली देने, पांच सौ रुपये में गैस सिलेंडर देने, हर महिला को दो हजार रुपये मासिक आर्थिक सहायता देने और कर्मचारियों को ओल्ड पेंशन स्कीम का लाभ देने का वादा किया है। राहुल गांधी ने कहा कि बीजेपी ने किसानों का कर्ज तो माफ किया नहीं बल्कि बड़े उद्योगपतियों के हजारों करोड़ रुपए माफ कर दिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस विकसित, खुशहाल, उन्नत हरियाणा बनाना चाहती है लेकिन बीजेपी सरकार आपकी जेब से पैसा निकाल कर अमीरों की जेब भर रही है। कांग्रेस सरकार बनने पर हरियाणा के लोगों को आर्थिक सहायता की जाएगी। किसान को एमएसपी दी जाएगी,

गरीबों को घर, सेहत के लिए पच्चीस लाख तक का इलाज मुफ्त दिया जायगा और सबसे जरूरी भाईचारे को मजबूत और प्रगढ़ कर पूरे मुल्क से नफरत को मिटाना है क्योंकि भारत नफरत का नहीं बल्कि मुहब्बत और भाईचारे का देश है। उन्होंने कहा कि मोहब्बत से ही विकास, प्रगति और उन्नती की जा सकती है। उन्होंने बीजेपी को हराने और कांग्रेस को समर्थन देने की अपील करते हुए कहा कि छोटी छोटी कई पार्टियां बीजेपी की विभिन्न टीम बनकर चुनाव लड़ रही हैं, इनसे सावधान रहकर इनको भी सबक सिखाना है।

चुनावों ने दिलाई कोविड महामारी की याद-

विधानसभा चुनाव के चलते पिछले 10 दिन से कनीना के दो थानों में दर्ज नहीं हुई कोई एफआईआर

कनीना सुनील दीक्षित

आगामी 5 अक्टूबर को होने वाले विधान सभा चुनाव को लेकर पुलिस प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था में जुटा हुआ है वहीं आमजन भी चुनाव की भागदौड में लगा हुआ है। सभी का चुनाव की ओर फोकस होने के चलते पुलिस थाने सूने-सूने दिखाई पड़ने लगे हैं। जिसका सकारात्मक नतीजा दिखाई दिया है। कनीना सदर थाने में पिछले 10 दिन के अंतराल में कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं हुई है। इस थाने में अब तक 159 एफआईआर दर्ज की गई हैं, पुलिस की ओर से अंतिम प्राथमिकी 26 सितम्बर को एनएच 152डी के समीप बीच सडक पर गाडी खडी करने से हुए यातायात अवरूध को लेकर दर्ज की गई थी। उसके बाद कोई केस पंजीकृत नहीं किया है।ःइसी प्रकार कनीना शहर थाना में पिछली 24 सितम्बर को लास्ट एफआईआर संख्या 135 दर्ज की गई थी। जो बस स्टैंड के समीप बोलेरो कैंपर गाडी खडी करने से लगे जाम को लेकर गाडी चालक के खिलाफ दर्ज की गई थी। विदित रहे कि ऐसा कोविड महामारी के दौरान देखने में आया था। उस दौरान लॉक डाउन के समय महिने-महिने भर तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं हो सकी थी ओर अस्पतालों में मरीजों की लंबी-लंबी लाइनें लगना भी बंद हो गई थी। अब लगभग दिनरात चुनाव कंपेनिंग चलने से क्षेत्र में चोरी-चकारी की घटनाओं पर विराम लगा है, आमजन को चुनावी गतिविधियों से फुर्सत नहीं मिलने पर लडाई-झगडे की घटनाओं पर अंकुश लगा है। जिसके चलते एफआईआर की कार्रवाई पर ब्रेक लगा है। इस बारे में कनीना सदर थाना इंचार्ज निरीक्षक मुकेश कुमार ने बताया कि जनता का ध्यान चुनाव की ओर होने तथा पुलिस प्रशासन द्वारा क्षेत्र में लगातार गश्त करने व नाकों पर जांच करने के चलते अपराधों पर अंकुश लगा है। उन्होंने कहा कि कानून-व्यवस्था बनाये रखने के लिए उनकी ओर से सभी प्रयास किए जा रहे हैं।

सीनियर व जूनियर विद्यार्थियों का दल शैक्षणिक भ्रमण के लिए हुआ रवाना

कनीना सुनील दीक्षित

एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला ने अपने वार्षिक कैलेण्डर के अनुसार सीनियर व जूनियर विद्यार्थियों के दल को शैक्षिक भ्रमण के लिए रवाना किया। विद्यालय सीईओ आरएस यादव ने शैक्षणिक भ्रमण दल को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने बताया कि बृहस्पतिवार को कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के सीनियर विद्यार्थियों का दल रवाना हुआ जो दो दिन तक उत्तर प्रदेश के आगरा, मथुरा, वृंदावन धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करेगा जबकि कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के दल ने प्रतापगढ़ के लिए प्रस्थान किया है। विद्यालय के उपप्राचार्य पूर्ण सिंह ने बताया कि वरिष्ठ विद्यार्थी आगरा में ताजमहल, मथुरा व वृंदावन में प्रेम मंदिर, कृष्ण जन्मभूमि, मानसी गंगा सहित अन्य स्थलों का भ्रमण कर आधुनिक व पुरातन संस्कृति से रु-ब-रु होंगे। उन्होंने कहा कि पुरातन संस्कृति हमारी समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर है जो हमें आगे बढने के लिये प्रेरित करती है। 21वीं सदी के युवाओं को वर्तमान एवं पुरातन संस्कृति अवगत करवाना आवश्यक है। ऐकेडमिक शिक्षा के साथ-साथ भ्रमण करने से विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है।

भाजपा संविधान खत्म करना चाहती है, कांग्रेस रक्षा करेगी : राहुल गांधी

(अनिल मोहनियां नूंह)

नूंह में आयोजित जनसभा में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने संविधान की कॉपी दिखाते हुए कहा कि देश में कोई भी चुनाव हो, कांग्रेस वहां विचारधारा की लड़ाई लड़ती है। एक तरफ भाजपा की संविधान को खत्म करने की विचारधारा है तो दूसरी तरफ डॉ. अंबेडकर के संविधान को बचाने वाली कांग्रेस की विचारधारा है। हरियाणा में भी बीजेपी से लड़ाई, भाजपा से संविधान को बचाने की है। बीजेपी नफरत फैलती है और कांग्रेस मोहब्बत से चलती है। नफरत से देश कमजोर होता है, डर और दुख फैलता है। लेकिन मोहब्बत नफरत को खत्म कर देती है। मोहब्बत से ही भाईचारा फैलता है और देश की तरक्की होती है। इसलिए हरियाणा में संविधान और मोहब्बत की जीत होगी। ःराहुल गांधी ने कहा कि उन्होंने कन्याकुमारी से कश्मीर तक यात्रा की। भाजपा वालों ने जहां भी नफरत का बाजार खोला, वहां कांग्रेस वालों ने मोहब्बत की दुकान खोली। भाजपा वाले देश को तोड़ने की बात करते हैं और हम देश को जोड़ने की बात करते हैं। सबसे जरूरी बात भाईचारा है। बीजेपी और आरएएस के लोग जहां भी जाते हैं, भाईचारे को तोड़ने की साजिशें रचते हैं। लेकिन हरियाणा में ये साजिश नाकाम होकर रहेगी। राहुल गांधी ने कहा कि आज गांधी, अंबेडकर और गरीब-मजदूर के संविधान को बचाने की लड़ाई है, जिसे भाजपा खत्म कर रही है। बीजेपी को अगर नहीं रोका गया तो आपका बिजली-पानी, जमीन सब खत्म हो जाएगी और केवल 20-25 लोगों के पास ही संसाधन रह जाएंगे। आपकी जेब से पैसा निकालकर अंबानी-अदानी को दिया जा रहा है। उन्होंने 20-25 लोगों का 16 लाख करोड़ का कर्जा माफ करवा दिया, लेकिन किसानों, मजदूरों और गरीबों का कर्जा माफ नहीं किया। राहुल गांधी ने कहा कि गरीबों की जेब में भाजपा पैसा डालने की बजाय निकालने का काम कर रही है। पेट्रोल, गैस महंगी हो रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य का निजीकरण हो रहा है। हरियाणा की सराकर बनते ही हम गरीबों की जेब में पैसा डालने का काम करेंगे। महिलाओं को हर महीने 2 हजार रुपए खाते में खटाखट दिए जाएंगे। गैस सिलेंडर 500 रुपए, 300 यूनिट बिजली मुफ्त, कर्मचारियों को ओपीएस, बुजुर्गों को 6 हजार रुपए महीना पेंशन, न्याय व समानता के साथ 36 बिरादरी में दो लाख पक्की नौकरियां, किसानों को एमएसपी की कानूनी गारंटी व तुरंत मुआवजा दिया जाएगा। वहीं, गरीबों को सौ-सौ गज के प्लाट व साढे.तीन लाख रुपये की लागत से दो कमरे का मकान और 25 लाख रुपए तक का इलाज मुफ्त दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि आज सीधी लड़ाई कांग्रेस और भाजपा के बीच है। यहां छोटी-छोटी पार्टियां बीजेपी की ए,बी,सी टीम है। अपना वोट खराब होने से बचाकर इस भाजपा को हटाने का काम करना है। अब साफ हो चुका है कि हरियाणा में कांग्रेस की लहर चल रही है। इसके बाद किसानों और गरीबों की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा स-रकार ने हरियाणा को खत्म कर दिया है। अमेरिका में मुझे हरियाणा के युवक मिले तो उन्होंने बताया कि हरियाणा में महंगाई, बेरोजगारी इतनी है कि वहां हमारा भविष्य सुरक्षित नहीं है। हमें हरियाणा के इन हालातों को बदलना है और प्रदेश से बेरोजगारी का खात्मा करना है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि मेवात वीरों और आजादी के दीवानों की धरती रही है। मेवात भाईचारे की मिसाल है। कई ताकतों ने यहां का भाईचारा खराब करने की कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हो सके। कांग्रेस ने वहां पर पेयजल परियोजनाएं, मेडिकल कॉलेज समेत अनेक काम करवाए। सरकार बनने पर यहां पर यूनिवर्सिटी और कैनाल प्रोजेक्ट पूरे करवाए जाएंगे। इस अवसर पर कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल, कांग्रेस प्रत्याशी आफताब अहमद, मामन खान, मोहम्मद

इलयास, मोहम्मद इजराइल, कार्यकारी अध्यक्ष जितेंद्र भारद्वाज, पूर्व सांसद राज बब्बर मौजूद रहे।

कांग्रेस प्रत्याशी लखन सिंगला के रोड शो में उमड़ा लोगों का हजूम

लोगों ने दिया अपार समर्थन, बोले चंडीगढ़ जाने की करो तैयारी

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी लखन कुमार सिंगला ने चुनाव प्रचार के आखिरी दिन ओल्ड फरीदाबाद बाजार में विशाल रोड शो निकालकर अपना शक्ति प्रदर्शन किया। यह रोड शो सेक्टर-29 मेन बाजार से आरंभ होते हुए बाजारों से होकर गुजरा और चांदीवाली धर्मशाला पर सम्पन्न हुआ। रोड शो में हजारों-हजारों की संख्या में लोगों ने हाथों में कांग्रेस के झंडे लेकर 'कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद, चौ. भूपेंद्र सिंह हुड्डा जिंदाबाद, लखन कुमार सिंगला जिंदाबाद' के गगनचुंबी नारे लगाकर पूरे माहौल को कांग्रेसमय कर दिया। जहां-जहां से यह रोड शो निकला, वहां भारी तादाद में दुकानदारों, व्यापारियों सहित छत्तीस बिरादरी के लोगों ने लखन सिंगला का पुष्प वर्षा कर, शॉल ओढ़ाकर तथा माला पहनाकर उनका अभिनंदन करते हुए उन्हें भरपूर समर्थन दिया। लोगों के स्नेह रुपी मिले प्यार और आर्शीवाद से उत्साहित लखन कुमार सिंगला ने कहा कि फरीदाबाद क्षेत्र की जनता ने पिछले 25 दिनों के दौरान उन्हें बहुत प्यार, सम्मान व आर्शीवाद दिया है, जिसका वह कभी ऋण नहीं उतार सकते। हमने और आपने जो मिलकर मेहनत की है, अब उस मेहनत को वोट में तब्दील करना है क्योंकि जब हमारी मेहनत वोट में तब्दील होगी, तभी हमें इस मेहनत का फल मिलेगा, इसलिए इस बार फरीदाबाद के उन्नत भविष्य के लिए आप मुझे वोट दे और कांग्रेस को मजबूत करें। लखन सिंगला ने भाजपा प्रत्याशी पर ओछी राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि

अपनी हार को देखकर वह निम्न दर्जे की राजनीति पर उतारू हो गए है, लेकिन मैं एक सामाजिक व्यक्ति हूं और चुनावी रण में एक योद्धा की तरह लड़ूंगा क्योंकि मुझे पता है कि मेरे ऊपर मेरी क्षेत्र की छत्तीस बिरादरी का आर्शीवाद है और जनता वोट की चोट से भाजपा प्रत्याशी का अहंकार तोडने का काम करेगी। श्री सिंगला ने लोगों से भावानात्मक जुड़ते हुए कहा कि 30 सालों से मैं आपकी सेवा में समर्पित भावना से काम कर रहा हूं, मुझसे कोई जाने-अनजाने अगर गलती हो गई हो तो मुझे माफ कर दे और मेरे इस 30 साल के वनवास को अपने वोट रुपी आर्शीवाद से खत्म कर दे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि विधायक नहीं बल्कि सेवक बनकर क्षेत्र की सेवा करूंगा। आपके मान-सम्मान और क्षेत्र के विकास में कभी कोई कोर कसर बाकि नहीं छोड़ूंगा।

धनेश अदलक्खा को जिता दो, ये आपकी सेवा में नहीं रहने देंगे कोई कमी : रवि किशन

भोजपुरी स्टार ने जनसभा में मांगे भाजपा प्रत्याशी अदलक्खा के लिए वोट

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। गोरखपुर से भाजपा सांसद एवं भोजपुरी सुपर स्टार रवि किशन ने कांग्रेस पार्टी पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस झूठ और लूट की राजनीति करती है, 65 सालों तक देश की सत्ता में रही कांग्रेस ने देश का विकास नहीं किया लेकिन जब से केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार बनी है, तब से भारत विकास की नई बुलंदियों को छू रहा है इसलिए आपको हरियाणा में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाकर मोदी जी के हाथों को मजबूत करना है।

रवि किशन बीती रात्रि शिवदुर्गा विहार में बडखल से भाजपा प्रत्याशी धनेश अदलक्खा के समर्थन में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान रवि किशन के जनसभा में पहुंचने पर धनेश अदलक्खा सहित अन्य भाजपा नेताओं ने उनका फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया। उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए रवि किशन ने कहा कि भाजपा गरीबों व मेहनतकशो की पार्टी है, इस पार्टी में कार्यकर्ताओं को पूरा मान सम्मान मिलता है, मुझे जैसे कार्यकर्ता को मोदी जी ने गोरखपुर से सांसद बना दिया, जहां से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सांसद थे। उन्होंने कहा कि नायब सैनी जी लोकसभा में मेरे मित्र है, उन्हें भाजपा ने हरियाणा का सीएम बना दिया।

उन्होंने कार्यकताओं से कहा कि आप मेहनत करो कभी भी आपकी लाटरी या जैकपॉट लग सकता है। सांसद रविकिशन ने धनेश अदलक्खा की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह नेकदिल इंसान है, जो तीन-तीन बार पार्षद रहे है, इन्होंने जनसेवा की है इसलिए मोदी जी ने ही इन्हें टिकट दिया है इसलिए आप सभी को इन्हें भारी मतों से जिताकर विधानसभा में भेजना है, मैं आपको

वचन देता हूं कि यह आपकी सेवा में कोई कमी नहीं रहने देंगे, सडक़, पानी, सीवरेज व बिजली जैसी सभी समस्याओं का समाधान करवाएंगे। उन्होंने अपने भोजपुरी अंदाज में उपस्थितजनों से हाथ उठवाकर कहा कि धनेश अदलक्खा भाजपा का सच्चा सिपाही है, इसे जिताकर भेज दो, बडखल के विकास की जिम्मेवारी हम सभी की होगी। इस मौके पर भाजपा प्रत्याशी धनेश अदलक्खा ने सांसद रवि किशन का फरीदाबाद आगमन पर स्वागत करते हुए कहा कि आज पूरे प्रदेश में भाजपा की लहर चल रही है और यह चुनाव विकास और सुशासन का चुना है इसलिए पांच अक्टूबर को भाजपा के पक्ष में मतदान करके मुझे अपना आर्शीवाद दे, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जिस प्रकार मैंने तीन बार पार्षद रहते हुए लोगों की सेवा की, बडखल क्षेत्र के लोगों की सेवा में भी कोई कमी नहीं रहने दूंगा।

लखन सिंगला को जिता दो, इनको चंडीगढ़ से खाली हाथ नहीं आने देंगे : दीपेंद्र हुड्डा

रोहतक के सांसद ने की कांग्रेस प्रत्याशी को विजयी बनाने की अपील

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। रोहतक के सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने संत सूरदास की पावन स्थली गांव सीही को नमन करते हुए कहा कि जो फरीदाबाद कभी देश की शान हुआ करता था, भाजपा ने दस सालों में इसे गड्ढों, ओवरफ्लो सीवरेज, कूडे के ढेरों में तब्दील कर इसे नरक सिटी बना दिया। आज हर ओर समस्याएं व्याप्त है, कहीं प्रापर्टी आईडी की समस्या, कहीं पीने के पानी की समस्या, कहीं टूटी सडक़ों की समस्या, भाजपा ने फरीदाबाद को विकास के मामले में कोसो पीछे छोड़ दिया है। आप लखन सिंगला को यहां से जिताकर भेजो, इनको चंडीगढ़ में बड़ी जिम्मेदारी देते हुए हम इन्हें खाली हाथ नहीं भेजेंगे। हम विश्वास दिलाते है कि मिलेनियम सिटी गुरुग्राम की तर्ज पर फरीदाबाद का समुचित विकास कराएंगे। श्री हुड्डा

बीती रात्रि सेक्टर-8 गांव सीही के पार्क में समस्त ग्रामवासी एवं छत्तीस बिरादरी व सेक्टर-8 की ओर से कांग्रेस प्रत्याशी लखन कुमार सिंगला के समर्थन में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान गांव की मौजिज सरदारी की ओर से दीपेंद्र हुड्डा व लखन सिंगला का सम्मान रुपी पगड़ी बांधकर एवं फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया गया। लोगों को संबोधित करते हुए दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि लखन सिंगला पिछले 30 सालों से कांग्रेस पार्टी और फरीदाबाद क्षेत्र की सेवा में समर्पित भावना से कार्य कर रहे है। जितनी अग्नि परीक्षा इन्होंने दी है, इतनी किसी ने नहीं दी, अबकि बार इनका बेडा पार कर दो और इन्हें भारी मतों से जिताकर चंडीगढ़ भेज दो, फरीदाबाद के समुचित विकास की जिम्मेवारी हमारी होगी। उन्होंने कहा कि हुड्डा सरकार में फरीदाबाद के विकास की जो नींव रखी गई थी, उसी नीव को आगे बढाते हुए इसका विकास किया जाएगा। आप बदलाव करो, फरीदाबाद को हम चमकाएंगे। इस मौके पर कांग्रेस प्रत्याशी लखन कुमार सिंगला ने चौ. दीपेंद्र हुड्डा का सीही गांव की पावन धरा पर पधारने पर स्वागत करते हुए कहा कि आज पूरे प्रदेश में कांग्रेस की सुनामी चल रही है और भाजपा वेंटिलेंटर पर है। उन्होंने कहा कि हर कोई भाजपा से मुक्ति पाना चाहता है और कांग्रेस सरकार लाना चाहता है। उन्होंने कहा कि 5 अक्टूबर आएगी, भाजपा जाएगी और कांग्रेस सत्ता में आएगी। इस दौरान हजारों-हजारों की संख्या में जनसभा में मौजूद लोगों ने कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद, भूपेंद्र सिंह हुड्डा जिंदाबाद, दीपेंद्र हुड्डा जिंदाबाद, लखन सिंगला जिंदाबाद, के गगनचुंबी नारे लगाकर पूरे माहौल को कांग्रेसमय कर दिया। कार्यक्रम में पंजाबी सिंगर रोहित सरदाना ने लाईव प्रस्तुति दी, जिसे लोगों ने खूब सराहा और जमकर इसका लुत्फ उठाया।

छत्तीस बिरादरी के आर्शीवाद से जितेंगे तिगांव का चुनावी रण : ललित नागर

नागर बोले, हार होने की घबराहट से विरोधी अपना रहे है औछे हथकंडे

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। तिगांव विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक एवं पंचायती उम्मीदवार ललित नागर ने कहा है कि तिगांव क्षेत्र की जनता ने चुनावी अभियान के दौरान पिछले 25 दिनों के दौरान जो प्यार और आर्शीवाद उन्हें दिया है, उसके लिए वह सदैव उनके ऋणी रहेंगे। आपकी एकजुटता मेरी ताकत है और हम सभी को आने वाले दो दिनों पूरी मेहनत से डटे रहना है और जब तक पोलिंग पूरी न हो जाए, तब तक चैन से नहीं बैठना है। श्री नागर ने कहा कि यह चुनाव किसी राजनैतिक दल का नहीं है, यह चुनाव तिगांव क्षेत्र की छत्तीस बिरादरी के मान सम्मान का चुनाव है। आपने पार्टी-दल से ऊपर उठकर अपने बेटे ललित नागर को अपना माना, मुझे प्यार दिया सम्मान दिया, इसके लिए मैं तहेदिल से आपका आभार व्यक्त करता हूं।

उन्होंने कहा कि छत्तीस बिरादरी के बढ़ते भाईचारे व एकता से घबराकर मेरे विरोधियों ने मेरे कांग्रेस पार्टी के पोस्टर छपवा दिए है और उन्हें रातोंरात लगवाने का भी प्रयास कर रहे है ताकि लोग भ्रमित हो जाए और मुझे दिए जाने वाले वोट कंफ्यूजन में किसी और को मिल जाए। लेकिन ऊपर वाला जानता है कि हम सच्चे मन से मेहनत कर रहे है, आपकी मेहनत व्यर्थ नहीं होगी, इसलिए आने वाले दो दिनों तक आप सभी स्वयं को 'ललित नागर' मानकर चुनावी समर में उतरे और पूरी जागरुकता के साथ मतदान करे और दूसरों को करवाने में भी मदद करे। ललित नागर चुनाव प्रचार के आखिरी दिन गांव नचौली, बादशाहपुर, शिव कालोनी में आयोजित सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान गांव की ओर से उन्हें सम्मान रुपी पगड़ी बांधकर एवं फूल मालाओं से उनका स्वागत किया और भरोसा दिलाया कि अबकि बार वह भारी मतों से जीतकर चंडीगढ़ पहुंचेंगे। ललित नागर ने कहा कि प्रचार के आखिरी दिन आज वह बड़ा रोड शो करना चाहते थे, लेकिन आखिरी समय पर उनके रोड शो की परमिशन को विरोधियों ने कैंसिल करवा दिया, लेकिन ऐसी हरकतों से कुछ होने वाला नहीं है क्योंकि लोकतंत्र में सबसे बड़ी जनता जनार्दन होती है और जिसके साथ चौरासी पाल और छत्तीस बिरादरी का आर्शीवाद हो, भला उसे फिर क्या चिंता करने की जरूरत है। उन्होंने लोगों से अपील की कि 5 अक्टूबर को मेरे चुनाव चिन्ह 'नारियल के चार पेड़' बैलेट नंबर 10 पर अधिक से अधिक मतदान करके मुझे विजयी बनाएं, मेरी जीत तिगांव क्षेत्र की छत्तीस बिरादरी की जीत होगी और यह जीत तिगांव क्षेत्र के विकास में नया अध्याय जोडने का काम करेगी।

एनआईटी क्षेत्र की तरक्की और खुशहाली के लिए 'चश्मे' के निशान पर करे मतदान : नगेंद्र भड़ाना

इनेलो-बसपा प्रत्याशी का चुनावी सभाओं में लोगों ने किया जोरदार स्वागत

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। पिछले पांच सालों में एनआईटी विधानसभा क्षेत्र के साथ सत्तारुढ़ भाजपा पार्टी के नेताओं और कांग्रेस के विधायक ने सौतेला बर्ताव किया है। इन दोनों पार्टियों की लगातार अनदेखी के चलते एनआईटी विधानसभा क्षेत्र विकास की दौड़ में काफी पीछे छूट गया है। अगर आप लोगों ने अपना विश्वास और समर्थन देकर मुझे हरियाणा विधानसभा में भेजने का काम किया तो मैं एनआईटी विधानसभा क्षेत्र में एक समान रुप से तेजी से विकास कार्य करवाऊंगा तथा क्षेत्र की सभी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर खत्म करने का काम किया जाएगा। उक्त विचार इनेलो-बसपा गठबंधन के एनआईटी 86 विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी नगेंद्र भड़ाना ने आज क्षेत्र के गांव मांगर, सिलाखड़ी, धौज, खेड़ी गुजरान, पर्वतीया कालोनी, जवाहर कालोनी, नंगला एंक्लेव व संजय कालोनी में आयोजित विभिन्न चुनावी सभाओं को संबोधित करने के उपरांत व्यक्त किए। नगेंद्र भड़ाना ने कहा कि मेरे चुनाव जीतने के तुरंत बाद सभी वृद्धों की वृद्धावस्था पेंशन बढ़ाकर 7100 रुपए की जाए, हर घर में घरेलू रसोई गैस सिलेंडर 500 रुपए में दिया जाएगा तथा प्रत्येक घर में महिलाओं को प्रतिमाह 1100 रुपए भत्ता दिया जाएगा, कानून सम्पत प्रक्रिया क्षेत्र के पहाड़ों को खुलवाया जाएगा ताकि एनआईटी 86 विधानसभा क्षेत्र के हजारों बेरोजगार युवाओं को रोजगार मिल सकेगा। नगेंद्र भड़ाना ने कहा कि कांग्रेस और भाजपा दोनों पार्टी एक सिक्के के दो पहलु है और दोनों की नीयत में खोट है, यह दोनों पार्टियां एनआईटी क्षेत्र का विकास नहीं करवाना चाहती, अबकि एनआईटी क्षेत्र की जनता को जागरुक होकर अपने हितों के लिए मतदान करना होगा और 'चश्मे' के निशान पर बटन दबाकर क्षेत्र की तरक्की और खुशहाली के लिए मुझे वोट रुपी आर्शीवाद देकर जिताने का काम करेगी। इस दौरान जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं में पहुंचने पर क्षेत्र की जनता ने नगेंद्र भड़ाना का फूल मालाओं व ढोल नगाड़ों के साथ जोरदार स्वागत किया।

टेकचंद शर्मा को जिता दो, पृथला क्षेत्र के विकास में नहीं रहेगी कोई कमी : बबीता फौगाट

पूर्व अंतर्राष्ट्रीय रेसलर ने जनसभा के माध्यम से भाजपा प्रत्याशी के लिए मांगे वोट

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। पूर्व अंतर्राष्ट्रीय रेसलर एवं वरिष्ठ भाजपा नेत्री बबीता फौगाट ने कांग्रेस पार्टी को झूठ और जुमलेबाजों की पार्टी बताते हुए कहा कि 2014 से देश में सिर्फ और सिर्फ घोटाले और भ्रष्टाचार होते थे, लेकिन जब से मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बने, तब से विकसित भारत का उदय हुआ और आज अमेरिका व चीन जैसी बड़ी शक्तियां भी भारत का लोहा मानती है। यह सब प्रधानमंत्री की दूरगामी सोच के चलते संभव हुआ है, इसलिए उन्नत भारत और विकसित हरियाणा के लिए प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाने का काम करे। बबीता फौगाट गुरुवार को गांव मोहना में पृथला विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी पं. टेकचंद शर्मा के समर्थन में आयोजित चुनावी जनसभा को संबोधित कर रही थी। इस दौरान गांव की सरदारी की ओर से बबीता फौगाट और टेकचंद शर्मा का सम्मान रुपी पगड़ी बांधकर स्वागत किया गया। भाजपा नेत्री बबीता फौगाट ने कहा कि टेकचंद शर्मा नेक दिल इंसान है और मेहनती व्यक्ति है, जिन्होंने पहले भी विधायक रहते हुए पृथला क्षेत्र में भरपूर विकास कार्य किए, पार्टी ने इन पर विश्वास जताया है, इसलिए पांच अक्टूबर को आपको ज्यादा से ज्यादा कमल का बटन दबाकर टेकचंद शर्मा को जिताकर विधानसभा में भेजना ताकि यह फिर से पृथला क्षेत्र में विकास की गंगा बहा सके। इस मौके पर भाजपा प्रत्याशी पं. टेकचंद शर्मा ने बबीता फौगाट का पृथला की धरा पर पधारने पर स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने अपने पांच साल के विधायक कार्यकाल में रिकार्ड 2500 करोड़ के विकास कार्य करवाए थे, करवाए गए एक-एक विकास कार्य उन्हें याद है, लेकिन पिछले जनप्रतिनिधियों ने क्षेत्र की अनदेखी की है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अगर आपने मुझे विधायक चुनकर विधानसभा में भेजा तो 2024 से 2029 तक हम संकल्प के तहत काम करेंगे और ऐसा काम करेंगे, जो दिखेगा और लोगों को उससे फायदा भी होगा। इसलिए सुशासन और विकास के लिए पृथला क्षेत्र में कमल खिलाने का काम करे। इस अवसर पर डा. बलदेव अलावलपुर, बिजेंद्र नेहरा सहित अनेकों गणमान्य लोग मौजूद थे।

4 बेसहारा बुजुर्गो का सहारा बना ताऊ देवीलाल वृद्धाश्रम

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। बुजुर्गों को सहारा देने वाली संस्था नवजन मोर्चा समिति(रजि0) ताऊ देवीलाल वृद्धाश्रम 2डी-ब्लॉक ने आज 4 बेसहारा बुजुर्ग को आश्रम में सहारा देकर ना केवल सामाजिक कार्य किया है बल्कि 4 अनमोल जिन्दगी को भी बचाया है। दरअसल समिति के संचालक कृष्ण लाल बजाज को समाजसेवी राजकिशन ने फोन पर सूचना दी कि 4 बुजुर्ग(जिसमें 1 महिला और 3 पुरूष) एक नंबर संतो के गुरूद्वारे के सामने लावारिस हालत में बैठे है। कृष्ण लाल बजाज बिना समय गंवाए अपनी टीम के साथ मौके पर पहुचें और तुरंत उन्हें उठाकर वृद्धाश्रम में लेकर आए और खानपान दिया। पूछताछ करने पर महिला बुजुर्ग जोकि देखने में असमर्थ है ने अपना नाम देवकी उम्र 60,वर्ष बताया। इसके अलावा तीन बुजर्गो ने अपना नाम जयभगवान उम्र

62,आशीष कुमार उम्र 72,तरसेम उम्र 60 वर्ष बताया। कृष्ण लाल बजाज ने बुजुर्गो को आश्वासन दिया कि जब तक चाहे वह आश्रम में रह सकते है और उनके खाने और पहनने की भी व्यवस्था की जाएगी। कृष्ण लाल बजाज ने बताया कि बुजुर्गो के बारे में लिखित सूचना एक नंबर कोतवाली पुलिस में दे दी जाएगी

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुश्कर सिंह धामी ने सतीश फागना के लिए वोट मांगे

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुश्कर सिंह धामी ने एनआईटी विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी सतीश फागना के समर्थन में आयोजित विशाल जनसभा में लोगों से अपील करते हुए कहा कि सतीश फागना को भारी मतों के साथ जिताएं।

विशाल जनसभा में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर समेत भाजपा के वरिष्ठ नेताओ का सानिध्य रहा। पुश्कर सिंह धामी ने कहा कि भाजपा ने बिना पर्ची बिना खर्ची हमारे योग्य बच्चों को डेढ़ लाख नौकरियां दीं लेकिन कांग्रेस आपके हक पर डाका मारना चाहती है। यहां बड़ी संख्या में उत्तराखण्ड का मतदाता रहता है। यह मतदाता मेरा और भाजपा का परिवार है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप

लोग भाजपा उम्मीदवार सतीश फागना को भारी मतों के साथ जिताकर विधानसभा पहुंचाएंगे और हरियाणा में भाजपा की तीसरी बार डबल इंजन सरकार बनाएंगे। केन्द्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए भाजपा को वोट दें उन्होंने कहा कि किसी के बहकावे में आने की जरूरत नहीं है और भाजपा के चुनाव चिन्ह कमल निशान पर वोट देकर अपने क्षेत्र की खुशहाली और तरक्की का रास्ता खोलें। इस अवसर पर सतीश फागना ने कहा कि यदि मैं विधायक बना तो एनआईटी में विकास की झड़ी लगाऊंगा। इस चुनाव का महत्व व्यक्तिगत ना होकर एनआईटी विधानसभा क्षेत्र के सभी नागरिकों के उत्थान से जुड़ा हुआ है। नए विजन के साथ हर इलाके में विकास कार्य किए जाएगें। सतीश फागना ने कहा कि पिछले 24 दिनों से मुझे जो मान सम्मान दिया जा रहा है उसे में समय आने पर ब्याज समेत चुकाऊंगा।

संपादकीय

चीन पर कभी यकीन नहीं किया जा सकता

नरवीर यादव
कार्यकारी संपादक

लगातार चार साल से चले आ रहे भारत चीन के बीच तनाव के कम होने के संकेत हैं। भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों को लेकर हाल में घटनाक्रम बहुत तेजी से घटा है। चीन भारत सीमा से सेना का पीछे हटना बहुत अच्छा है किंतु चीन की बात पर आंख मूंदकर यकीन नहीं किया जा सकता। समझौते करने के बाद अपनी बात से मुकरना उसकी आदत रही है। धोखा देना चीन का चरित्र है। उस पर पूरी तरह से नजर रखनी होगी। उसकी चाल के अनुरूप हमें अपना व्यवहार और तैयारी करना होगी।

भारत चीन सीमा विवाद के सुलझने के संकेत 12 सितम्बर को ही सेंट पीटर्सबर्ग में ब्रिक्स एनएसए लेवल की समिट के साइडलाइन्स पर हुई उस बैठक के दौरान ही दिख गए थे जो एनएसए अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई थी। भारतीय विदेश मंत्रालय की ओर से बैठक के बाद जारी प्रेस नोट में इस बात का जिक्र था कि दोनों देशों ने बचे हुए क्षेत्रों में भी पूर्ण डिसएंगेजमेंट की दिशा में काम करने को लेकर सहमति जताई है। जानकार मानते हैं कि गतिरोध दूर करने करने की दिशा में ले जाने की प्रक्रिया एकाएक नहीं होती। इसके लिए बैकग्राउंड में काम होता रहता है।

ओआरएफ में फेलो और चीन मामलों के जानकार कल्पित मणकिकर कहते हैं कि ऐसा एक लंबी प्रक्रिया के तहत होता है। दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और दोनों देशों के विदेश मंत्री लगातार मुलाकात करते आ रहे हैं। पिछले चार सालों से बॉर्डर मुद्दों को सुलझाने को लेकर कोशिशें लगातार हो रही है। सेना के कमांडर स्तर पर बातें अलग से होती रही हैं। भारत और चीन दोनों की ओर से इस तरह की कोशिशें की जा रही थी। हालांकि अब जो दिख रहा है, उसके मद्देनजर इस तरह की कोशिशें क्या दिशा लेंगी, इसे लेकर अभी वेट एंड वॉच की स्थिति में ही रहा जा सकता है। बॉर्डर पर आए गतिरोध के मद्देनजर विदेश मंत्रियों और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की बैठकें किए जाने का एक मैकेनिज्म तैयार किया गया है।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पूर्वी लद्दाख में सीमा मुद्दे पर 12 सितम्बर को कहा कि सैनिकों की वापसी से संबंधित मुद्दे लगभग 75 प्रतिशत तक सुलझ गए हैं लेकिन बड़ा मुद्दा सीमा पर बढ़ते सैन्यीकरण का है। जिनेवा में थिंकटैंक के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि जून 2020 में गलवान घाटी में हुए टकराव ने भारत-चीन संबंधों को समग्र रूप से प्रभावित किया।

जयशंकर ने कहा कि विवादित मुद्दों का समाधान ढूंढने के लिए दोनों पक्षों में बातचीत चल रही है। हमने कुछ प्रगति की है। मोटे तौर पर सैनिकों की वापसी संबंधी करीब तीन-चौथाई मुद्दों का हल निकाल लिया गया है। लेकिन इससे भी बड़ा मुद्दा यह है कि हम दोनों ने अपनी सेनाओं को एक-दूसरे के करीब ला दिया है और इस लिहाज से सीमा का सैन्यीकरण हो रहा है।

सूत्रों का कहना है कि भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच पूर्वी लद्दाख में कुछ टकराव वाले बिंदुओं पर गतिरोध बना हुआ है। भारत कहता रहा है कि सेना के पूर्व स्थान पर पहुंचे बिना सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति नहीं होगी, चीन के साथ संबंध सामान्य नहीं हो सकते। जयशंकर ने कहा कि 2020 में जो कुछ हुआ, वह कुछ कारणों से कई समझौतों का उल्लंघन था जो अभी भी हमारे लिए पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बहुत बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया और स्वाभाविक रूप से जवाबी तौर पर हमने भी अपने सैनिकों को भेजा।

2020 की झड़प के बाद से दोनों देश सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा के रूप में भी जाना जाता है। भारत द्वारा उच्च ऊंचाई वाले हवाई अड्डे तक एक नई सड़क का निर्माण चीनी सैनिकों के साथ 2020 में होने वाली घातक झड़प के मुख्य कारणों में से एक माना जा रहा है।

इस बार चीनी सेना के सीमा से पीछे हटने का कारण चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य वांग कायवान भी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अशांत विश्व का सामना करते हुए, दो प्राचीन पूर्वी सभ्यताओं और उभरते विकासशील देशों के रूप में चीन और भारत को स्वतंत्रता पर दृढ़ रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि एकता और सहयोग का चयन करना चाहिए तथा एक-दूसरे को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए। वांग ने उम्मीद जताई कि दोनों पक्ष व्यावहारिक दृष्टिकोण के जरिए अपने मतभेदों को उचित ढंग से हल करेंगे और एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने का उचित तरीका ढूंढेंगे। चीन-भारत संबंधों को स्वस्थ, स्थिर और सतत विकास के रास्ते पर वापस लाएंगे।

इतना सब हो रहा है पर जरूरी यह है कि दोनों का मई 2020 की यथास्थिति पर वापस लौटना ही समाधान है। निश्चित रूप से पीछे हटना समाधान नहीं है। यदि निश्चित रूप से समाधान के रास्ते पर चले तो भारत नुकसान में ही रहेगा। इन सब को देखकर भारत को चलना होगा। मई 2020 की स्थिति पर चीन सहमत होगा, ऐसा नहीं लगता।

हम मिलकर बड़खल विधानसभा का भविष्य संवारेंगे : विजय प्रताप

पूर्व कैबिनेट मंत्री एसी चौधरी ने दिया विजय प्रताप को समर्थन, कहा बड़खल विधानसभा के नवनिर्माण के लिए अपने बेटे विजय प्रताप को भारी मतों से जिताएं

न्यू टाउनशिप में विजय आपके द्वार पदयात्रा में हजारों लोग बोले विजय प्रताप की होगी विजयश्री

आपने जो अपार समर्थन दिया है मैं उसके लिए तहे दिल से आभारी हूं: विजय प्रताप

न्यूटाउन में भारी संख्या में खड़े क्षेत्र के लोगों ने फूल मालाओं, पगड़ी बांध विजय प्रताप का किया अभिनंदन

दस साल में बर्बाद हुए बड़खल विधानसभा के नव निर्माण के लिए कांग्रेस को वोट दें: विजय प्रताप

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। बड़खल विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के अंतिम दिन निकाले गए विजय आपके द्वार पदयात्रा में कांग्रेस प्रत्याशी विजय प्रताप सिंह के समर्थन में हजारों की संख्या में लोग उमड़ पड़े। विजय प्रताप की एतिहासिक पदयात्रा में हजारों लोगों की भीड़ ने यह साबित कर दिया है। अबकि बार विजय प्रताप। पदयात्रा में उमड़ी भीड़ ने न सिर्फ विजय प्रताप के पक्ष में वोट डालने की बात कही बल्कि जनता ने खुले आम कहा कि अब बदलाव का समय है और विजय प्रताप ही हमारे नए विधायक होंगे। एतिहासिक पदयात्रा एनआईटी की मार्केट नम्बर एक से आर्य समाज रोड से शुरू हुई और कल्याण सिंह चौक,

गुरुद्वारा श्री सिंह सभा, 1-2 चौक, शिवालय मंदिर चौक, लखानी चौक, 2-3 चौक, पीपल चौक, बिजली दफ्तर नम्बर 3, चिमनिबाई चौक, 4-5 चौक जूस. कौम नम्बर 5 मार्केट में जगह-जगह लोगों ने फूल मालाओं, पगड़ी बांधकर, फूलों की वर्षा कर विजय प्रताप सिंह का भव्य स्वागत किया। एनआईटी 1 कल्याण सिंह चौक पर विजय प्रताप को लड्डुओं से तोला गया। यहां पर उनको समर्थन देने के लिए मशहूर रैपर एम सी स्क्वायर पहुंचे और उन्होंने अपना मशहूर गाना 'सूदो सो छोरा, मैं करूं गाम तै बिलोंगे, मेरी ले ले राम-राम' गाकर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। न्यू टाउनशिप में लोगों का भारी जन समर्थन विजय प्रताप को मिला और यात्रा में चल रहे लोगों का जोश एवं उत्साह देखते ही बन रहा था। वहीं पदयात्रा अंतिम पड़ाव में निरंकारी चौक नजदीक एनआईटी पांच बांके बिहारी मंदिर पर जाकर समाप्त हुई। जहां विजय प्रताप ने विशाल जनसभा को सम्बोधित किया। जनसभा में पूर्व कैबिनेट मंत्री एसी चौधरी ने कांग्रेस प्रत्याशी विजय प्रताप को भरी सभा में समर्थन देते हुए कहा कि बर्बाद बड़खल विधानसभा क्षेत्र का नवनिर्माण करने के लिए अपने बेटे विजय प्रताप भारी मतों से विजयी बनाएं।

उपस्थित जनसभा को सम्बोधित करते हुए विजय प्रताप ने कहा कि मेरा उद्देश्य हमेशा जनता की सेवा करना रहा है। आपने जो अपार समर्थन दिया है मैं उसके लिए तहे दिल से आभारी हूं। यह जीत आपकी होगी और हम मिलकर बड़खल विधानसभा का भविष्य संवारेंगे। गौरतलब है कि चुनावी अभियान में विजय प्रताप ने अपने कंधों पर बड़खल विधानसभा की जिम्मेदारी ली और हर व्यक्ति तक पहुंचने का प्रयास किया। जबकि बाहर से आए नेता केवल वादों और भ्रष्टाचार में उलझे रहे। हरियाणा में सरकार बनेगी तो सवा दो करोड़ युवाओं को रोजगार मिलेगा, जिसमें फरीदाबाद का भी हिस्सा होगा। इसके अलावा महिलाओं को हर महीना 2 हजार रुपए सम्मान भत्ता दिया जाएगा, 500 रुपए में गैस सिलेंडर, बुजुर्गों को 6 हजार रुपए पेंशन भी दी जाएगी। इसके अलावा हर परिवार को 25 लाख रुपए का स्वास्थ बीमा दिया जाएगा, जिससे किसी भी निजी अस्पताल में जाकर अपना इलाज करवा सकेंगे। उन्होंने कहा कि फरीदाबाद जिला गुडगांव के बाद सबसे ज्यादा टैक्स देने वाला जिला है और प्रदेश के एक चौथाई जिलों को संभालता है। लेकिन, इस सबके बावजूद हमारी पहचान क्या है। पूरा फरीदाबाद आज टोल सिटी बना दिया है। आज फरीदाबाद की स्थिति ऐसी है कि सीवर का पानी मिलकर लोगों के घरे के पानी में आ रहा है। प्रोपर्टी आइडी, फैमिली आईडी के नाम पर लोगों को लूटा जा रहा है, लेकिन आप चिंता न करें कांग्रेस सरकार आने पर इन लूट के सभी साधनों को बंद किया जाएगा। उन्होंने लोगों से वादा किया कि किसी भी कीमत पर आपके मान-सम्मान को ठेस नहीं पहुंचने दूंगा। फरीदाबाद की शान बड़खल झील को सीवर के पानी से नहीं प्राकृतिक जल से भरा जाएगा। अंत में विजय प्रताप ने लोगों से हाथ के निशान के सामने वाला बटन दबाकर वोट की अपील की।

इस मौके पर विजय प्रताप ने मीडिया से बात करते हुए कहा की पिछले दस सालों में बड़खल विधानसभा में विकास नहीं हुआ है जिसके चलते बड़खल विधानसभा की जनता काफी त्रस्त हो चुकी है इसी के चलते ना केवल बड़खल विधानसभा की जनता बल्कि हरियाणा की जनता बदलाव चाहती है इस बार हरियाणा में पूर्ण बहुत से कांग्रेस की सरकार आ रही है इसलिए यहां की जनता उन्हें भी भारी बहुमत से जिताकर चंडीगढ़ विधानसभा भेजने का काम करेगी। विजय प्रताप ने कहा की उनके चंडीगढ़ पहुंचने के बाद बड़खल विधानसभा में रुके विकास कार्यों की विकास के पंख लग जाएंगे।

तिगांव विधानसभा से राजेश नागर को मिला सर्व समाज का समर्थन

ग्रेटर फरीदाबाद एडोर हैप्पी होम्स में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए सैकड़ों आरडब्ल्यूए और गांव के सरपंच पंच

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। तिगांव विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के उम्मीदवार राजेश नागर को सर्व समाज का समर्थन प्राप्त हुआ है। उनके समर्थन में एक बड़ी सभा ग्रेटर फरीदाबाद स्थित एडोर हैप्पी होम्स में आयोजित हुई, जिसमें ग्रेटर फरीदाबाद सोसायटीज और कॉलोनीज की तमाम आरडब्ल्यूए और गांव के पंच, सरपंच, पार्षद शामिल हुए और नागर को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की।

इस अवसर पर राजेश नागर ने कहा कि आप लोगों के समर्थन से मैं 2019 में हरियाणा में सबसे ज्यादा वोट लेकर विधानसभा पहुंचा था। मैंने आपके मान सम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी और आपकी हर बात सुनी और उसका हल देने का प्रयास किया। मैंने आपकी हर मांग को मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों के समक्ष रखकर उन्हें पूर्ण करवाया। इसके अलावा पूरे तिगांव विधानसभा क्षेत्र में सैकड़ों करोड रुपए की योजनाएं लेकर आया। आपके लिए निकम्मे अधिकारियों का तबादला करवाया। इस प्रकार मैंने जनता का शासन प्रशासन लाने का प्रयास किया। दूसरी ओर हमारी भाजपा सरकार ने आपकी दैनिक जीवन की बेहतरी के लिए अनेक कार्य किए जिसमें लोगों को स्वरोजगार की ओर बढ़ावा देने, क्षेत्र की सड़कों को विकास से जोड़ने और क्षेत्र में शिक्षा की अलग जगाने के काम शामिल हैं।

राजेश नागर ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का डंका आज देश दुनिया में बज रहा है, वहीं हमारे मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी प्रदेश को विकास की दिशा में तेजी से ले जा रहे हैं। हमने हरियाणा के लिए अपने संकल्प पत्र में सभी महिलाओं को लाडो लक्ष्मी योजना के तहत हर महीने 2100 रुपए देने, प्रदेश में दो लाख सरकारी नौकरी बिना पर्ची बिना खर्ची देने, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हर बेटी को स्कूटर देने, सभी को 10 लाख रुपए तक स्वास्थ्य बीमा देने सहित 70 वर्ष से ऊपर के व्यक्तियों के लिए भी पांच लाख रुपए की मुफ्त मेडिकल सहायता देने आदि प्रमुख वादे आपको किए हैं।

आप लोग जानते हैं कि भारतीय जनता पार्टी जो वादा करती है उसे निभाती है। भाजपा ने कहा कि राम मंदिर बनाएंगे तो बनाया, भाजपा ने कहा कि धारा 370 हटाएंगे तो हटाई, भाजपा ने कहा कि बिना पर्ची बिना खर्ची सरकारी नौकरियां देंगे तो डेढ़ लाख नौकरियां दी।

आप लोग विकास की गति को बनाए रखने और पर्ची खर्ची को दूर रखने के लिए हरियाणा में तीसरी बार डबल इंजन सरकार बनाएं। इसके लिए आपको अपने विधायक को भी जिताकर चंडीगढ़ भेजना होगा। तभी अपनी भाजपा सरकार बनेगी। नागर ने कहा कि वादे सभी करते हैं लेकिन भाजपा अपने वादे निभाती है। लेकिन आप जानते हैं कि प्रदेश में विकास तभी तेज होगा जब केंद्र और प्रदेश में एक ही दल की सरकार होगी। मेरी आपसे अपील है कि आप पांच अक्तूबर को हरियाणा में भी भाजपा की सरकार चुनें और तिगांव विधानसभा क्षेत्र से भाजपा का विधायक चुनकर चंडीगढ़ भेजें।

प्रचार के आखिरी दिन रवि डागर ने साधा विपक्ष पर निशाना

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। रवि डागर ने डबुआ मंडी के पास गुरुवार को ऑक्सीजन ढूंढ निकाला, जहां मिला कूड़ा करकट, गंदगी, बदबू, और अवैध कब्जे। आज हुडा 86 विधानसभा क्षेत्र में आम आदमी पार्टी प्रत्याशी रवि डागर अपने चुनाव प्रचार के दौरान डबुआ मंडी से गुजरते समय पहुंच गए विधायक जी द्वारा बनाए गए ऑक्सीजन में थोड़ा आराम करने लेकिन जब रवि डागर डबुआ मंडी के पास विधायक जी द्वारा स्थापित किए गए ऑक्सीजन पर पहुंचे तो सिर्फ वहां पर कुढावन, अवैध कब्जे, बदबू ही बदबू, और गंदगी मिली रवि डागर ने बताया कि विधायक सिर्फ झूठ बोलने के अलावा और जनता में झूठ का भ्रम फैलाने के अलावा कोई कार्य 5 साल में नहीं किया कोरोना काल के अंदर विधायक ने ऑक्सीजन को लेकर बड़े-बड़े वादे किए थे लेकिन विधायक अपने किसी भी वादे पर पूरा नहीं उतरे बस उन्हें अपने प्रचार सोशल मीडिया फेसबुक व्हाट्सएप पर करते ही पर नजर आए लेकिन जमीनी हकीकत उस पार है जमीनी हकीकत पर ना कोई ऑक्सीजन मिला और वहां पर अवैध कब्जे लोगों ने कर रखे हैं और उन अवैध कब्ज पर नागपुर विधायक व वर्तमान विधायक ने कभी आवाज उठाई दोनों ही विधायक इस सरकारी जमीन पर अपने अवैध कब्जे करवाते रहते हैं और अपने वर्चस्व की लड़ाई में ना कभी स्कूल ला पाए ना कोई कॉलेज ना बच्चों के लिए खेलने के लिए ग्राउंड उपलब्ध करा पाए दोनों विधायकों ने सिर्फ जनता के पैसे को लूटने का काम किया जनता की सुविधाओं को लेकर कभी आपस में एक दूसरे को गिरते हुए नजर नहीं आए रवि डागर के साथ प्रदेश प्रवक्ता नरेश शर्मा भी मौजूद रहे और उन्होंने पहले भी कई बार इस ऑक्सीजन का मुद्दा मीडिया के माध्यम से उठाते हुए कहा कि विधायक को ऑक्सीजन ना कभी बन न बनेगा सिर्फ विधायक झूठ की राजनीति करते हैं।

अग्रवाल समिति बल्लभगढ़ द्वारा महाराजा अग्रसेन जयंती के उपलक्ष में यज्ञ आयोजित

समाचार गेट/सुमित गोयल

बल्लभगढ़। महाराजा अग्रसेन जयंती के उपलक्ष में आज अग्रवाल समिति बल्लभगढ़ द्वारा अग्रवाल धर्मशाला, चावला कॉलोनी में यज्ञ का आयोजन किया गया। उक्त जानकारी देते हुए समिति के अध्यक्ष जितेंद्र सिंगला ने बताया कि प्रथम शारदीय नवरात्र को अग्रसेन जयंती होती है। यज्ञ के उपरांत जितेंद्र सिंगला ने बताया कि प्रभु श्री राम के वंशज अग्रसेन महाराज ने अग्र कुल की स्थापना की थी, उन्हीं की स्मृति में अग्रसेन जयंती मनाई जाती है। आज से लगभग 5200 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेन ने समाजवाद का सिद्धांत न केवल समाज को दिया अपितु उसे सफलतापूर्वक लागू भी किया। यज्ञ के उपरांत अग्रसेन दरबार चौक पर महाराजा अग्रसेन एवं 18 राजकुमारों की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया। यज्ञ में प्रमुख रूप से भगवान दास गोयल, जयकिशन गर्ग, अशोक अग्रवाल, पंकज सिंगला, दीपक मित्तल, घनश्याम मित्तल, विजय मंगला, प्रवीण गर्ग, दीपक अग्रवाल, ललित गोयल, लोकेश अग्रवाल, डॉ अभिलाष मंगला, हेमा जैन, वर्षा मित्तल, सुनीता गुप्ता, राजबाला, अशोक गुप्ता, नरेश अग्रवाल, मुकेश मित्तल, गोपाल गोयल, जगमोहन मंगला, रूपचंद गुप्ता, यशवंत मंगला, नितेश बंसल, चंद्रशेखर, सुनील गोयल तथा समाज के अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मतदाता मताधिकार कर चुनाव का पर्व-प्रदेश का गर्व थीम में निभाएं अपना भागीदारी : मोहन तिवारी

चुनाव का पर्व-प्रदेश का गर्व थीम को आगे बढ़ाते हुए मोहन तिवारी के नेतृत्व में भुपानी में मतदताओं को किया गया जागरूक

मोहन तिवारी के नेतृत्व में प्रवासी मतदान जागरूकता अभियान पैदल मार्च करके मतदाताओं को किया गया जागरूक

विधानसभा चुनाव 5 अक्टूबर के होने वाले मतदान को लेकर मोहन तिवारी ने किया मतदायाओं को जागरूक

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। हरियाणा की कुल 90 विधानसभा सीट के लिए शनिवार, 5 अक्टूबर को सुबह 7 बजे से सायं 6 बजे तक चुनाव का पर्व-प्रदेश का गर्व थीम के साथ मतदान होगा। चुनाव का पर्व- प्रदेश का गर्व थीम को आगे बढ़ाते हुए फरीदाबाद शहर के जाने माने समाजसेवी,अनशनकारी मोहन तिवारी ने 5 अक्तूबर को विधानसभा चुनाव के मतदान अभियान को और तेज गति देने के लिए फरीदाबाद के भूपानी मोड पर 3 अक्टूबर को 12 बजे सैकड़ों लोगों के साथ पैदल मार्च कर निकाल कर लोगों को जागरूक किए जिसमे महिलाएं भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

मोहन तिवारी ने कहा की चुनाव का पर्व प्रदेश का गर्व थीम को आगे बढ़ाते हुए 5 अक्टूबर को पहले वह सभी लोग मतदान करेगें फिर जलपान करने के प्रण लिया गया। मोहन तिवारी ने कहा की प्रवासी मतदान जागरूकता अभियान-पैदल मार्च के तहत भुपानी मोड,बजार से होते भुपानी गांव के विभिन्न गालियों में जाकर लोगों को लोगों का जागरूक किया गया। उन्होंने कहा की हरियाणा में 15वी विधानसभा आम चुनाव-2024 को 5 अक्तूबर को होने वाले मतदान को लेकर लोगों को जागरूक करना बहुत जरूरी है। श्री तिवारी ने कहा की भारतीय संविधान के तहत हमे यह अधिकार मिला है की जब भी किसी प्रतिनिधि का चुनाव करना हो तो हमे अपने मत का प्रयोग करना होता है ताकि उसका हम सही चुनाव कर सके।

श्री तिवारी ने कहा है की हर एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक को पहले मतदान और फिर जलपान करना चाहिए और बढ़ चढ़ एक मतदान मे हिस्सा लेना चाहिए और एक दूसरे को भी मतदान करने के लिए जागरूक करना चाहिए क्योंकि भारत का संविधान सभी को यह अधिकार देता है। श्री तिवारी ने सभी फरीदाबाद वासियों से अपील किया है की ज्यादा से ज्यादा संख्या में बढ़ चढ़ कर मतदान प्रतिशत को बढ़ाने में अपना अहम रोल निभाए। मोहन तिवारी ने बताया की भुपानी क्षेत्र में चुनाव का पर्व प्रदेश का गर्व,पहले मतदान फिर जलपान, प्रवासी मतदान जागरूकता अभियान, पैदल मार्च बैनर के माध्यम से आमजन को 5 अक्टूबर को मतदान दिवस पर मतदान करने का संदेश दिया गया है इस अवसर पर सुनीता वर्मा, स्वाति वर्मा, आशा वर्मा, देवानती गुप्ता,इनरावती गुप्ता,वियमलेश सिंह,राधा शर्मा, रजक, गुड्डन देवी, तारा देवी, मधु,अनिल, रेखा, सीमा, मीनू, सोनू वर्मा, रामचंद्र वर्मा सहित दर्जनों भर से ज्यादा लोग मौजूद रहे।

लीवर कैंसर का उपचार

लीवर कैंसर, लीवर में असामान्य कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि है। लीवर ऐसे तत्व उत्पन्न करता है जो रक्त का थक्का जमने में मदद करते हैं। विषैले तत्वों, दवाओं और अल्कोहल आदि को हटाता है। पित्त निर्मित करता है, जिससे शरीर को वसा और कोलेस्ट्रॉल अवशोषण में सहायता मिलती है।

पुरुषों को बीमारी अधिक

यह संयुक्त राज्य और यूरोप में अपेक्षाकृत कम पाया जाता है। अमेरिकन कैंसर सोसायटी के अनुमान के अनुसार, हर वर्ष 17,000 से अधिक लोगों में प्राइमरी लीवर कैंसर का निदान पाया जाता है। इनमें से अधिकतर की उम्र 40 वर्ष से अधिक होती है और 15,000 से ज्याादा लोगों की इस बीमारी से मृत्यु हो जाती है। संयुक्त राज्य में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में लीवर कैंसर के दोगुना मामले पाए जाते हैं।

कोशिकाएं फैलती हैं

संयुक्त राज्य में अधिकतर लीवर ट्यूमर, लीवर में अन्य अंगों मुख्य रूप से कोलोन, रेक्टिम, लंग, ब्रेस्ट, पैंक्रिया और स्टॅम से फैलते हैं। जब कोई कैंसर लीवर में अन्य कहीं से फैलता है तो कैंसर कोशिकाएं दोनों जगहों पर समान होती हैं। उदाहरण के लिए यदि फेफड़ों का कैंसर (लंग कैंसर) लीवर तक फैलता है तो लीवर में पाई जाने वाली कैंसर युक्त कोशिकाएं फेफड़ों में पाई गई कैंसरयुक्त कोशिकाओं के समान ही होती हैं। इस कारण व्यक्ति का उपचार लीवर कैंसर के लिए नहीं, बल्कि लंग कैंसर के लिए किया जाता है। लीवर कैंसर को डॉक्टन मेटॉस्टेटिक लंग कैंसर कह सकते हैं।

तीन प्रकार का लीवर कैंसर

प्राइमरी लीवर कैंसर के तीन मुख्य प्रकार हैं– हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा (हेपैटोमा या एचसीसी) हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा (हेपैटोमा या एचसीसी)। कोलनजियोकार्सिनोमा (बाइल डक्ट कैंसर)।

लीवर का कैंसर या तो लीवर में शुरू होता है या लीवर में शरीर के अन्य अंगों से फैलता है। प्राइमरी लीवर कैंसर सबसे ज्यादा पाया जाने वाला ठोस ट्यूमर है, जिसके एक मिलियन से अधिक मामलों का हर वर्ष निदान किया जाता है। इसमें 40 साल से अधिक उम्र के मरीजों की संख्या ज्यादा देखने को मिलती है। अगर आप भी इस बीमारी से ग्रस्त हैं तो आप डॉक्टर से उचित परामर्श लेकर इसका शीघ्र निदान करा सकते हैं।

जोखिम घटक

हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा के ज्यादातर मामलों में हेपैटाइटिस बी और हेपैटाइटिस–सी जिम्मेदार होते हैं। हेपैटाइटिस–ए में लीवर कैंसर पनपने का खतरा नहीं बढ़ाता। सिरोसिस, जिसमें लीवर की कोशिकाओं पर अनेक कारणों से दाग बन जाते हैं। संयुक्त राज्य में सिरोसिस का सबसे प्रचलित कारण हेपैटाइटिस–सी और अधिक मात्रा में शराब पीना है। संयुक्त राज्य में 50 से 70 प्रतिशत लीवर कैंसर के मामले सिरोसिस से जुड़े होते हैं। कुछ अध्ययनों में इसका संबंध हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा से पाया गया है।

इनसे बढ़ता है खतरा

इस प्रकार का कैंसर पनपने का खतरा बढ़ा देती हैं जिनमें शामिल हैं– पित्ताशय की पथरी (गॉलस्टोपन्सक), पित्ताशय दाह (गॉलब्लडेर इन्फलेमेशन) और कई बार क्रॉनिक अल्स रेटिव कोलाइटिस (लार्ज बावेल में इन्फलेपमेशन होना)।

एंजियोसरकोमा (हेमन्जियोसरकोमा) – यह लीवर कैंसर का बहुत कम पाया जाने वाला प्रकार है।

हेपैटोब्लॉस्टोनमा – यह दुर्लभ प्रकार का कैंसर, आमतौर से 4 वर्ष की उम्र से छोटे बच्चों में पाया जाता है।

लीवर कैंसर के लक्षण

बीमारी बढ़ जाने तक इसके लक्षण आमतौर से नहीं दिखते। लक्षणों में ये शामिल किए जा सकते हैं–

- वजन में अप्रत्याशित कमी आ जाना।
- ठीक से भूख न लगना।
- थोड़ा खाना खाने पर भी पेट भरा हुआ लगना।
- पेट के ऊपर या दाएं हिस्से में दर्द या सूजन का होना।
- त्वचा और आंखों पर पीलापन होना।
- लीवर का फैल जाना या लीवर के क्षेत्र में किसी पिंड का बनना।
- क्रॉनिक हेपैटाइटिस या सिरोसिस की समस्या गंभीर हो जाना।
- रक्त में शर्करा (ब्लड शुगर) कम होना।
- पुरुषों में स्तन वृद्धि होना।

लीवर कैंसर का निदान

लीवर कैंसर का पता तब लगता है, जब बीमारी का स्तर बढ़ जाता है। प्रारंभिक अवस्था में इसके लक्षण एकदम स्पष्ट नजर नहीं आते। डॉक्टर आपसे निम्न जांचें करा सकता है।

शारीरिक जांचें

वजन में कमी होने, कुपोषण, कमजोरी, लीवर का बढ़ना और इससे जुड़ी बीमारियां जैसे कि हेपैटाइटिस और सिरोसिस।

ब्लड टेस्ट

अल्फा–फेटोप्रोटीन नामक एक प्रोटीन के बढ़े हुए स्तर की जांच जिससे लीवर कैंसर का पता लग सकता है। कंप्यूटर का टेड टोमोग्राफी (सीटी) स्कैन, एक प्रक्रिया ट्यूमर की खोज और लोकेशन जानने के लिए जिसमें एक्स–रे और कंप्यूटर तकनीक का प्रयोग शरीर की अनुप्रस्थ (क्रॉस सेक्शूनल) छवियां निर्मित करने के लिए किया जाता है।

अल्ट्रा साउंड से जांचें

इसका उपयोग लीवर कैंसर की खोज और कैंसर युक्त (मैलिग्नेंथट) तथा कैंसर रहित (सामान्य) ट्यूमरों में अंतर के लिए किया जाता है।

डॉक्टर से कब संपर्क करें

यदि आपमें लीवर कैंसर का कोई भी लक्षण है तो अपने डॉक्टर से संपर्क करें। मुख्य लक्षण ये हैं– थकान, हल्का बुखार, त्वचा और आंखों का पीलापन (जांडिस), मांसपेशियों या जोड़ों का दर्द, मतली आना, मूत्र का गाढ़ा रंग, उल्टी होना, भूख न लगना और पेट में दर्द या सूजन आने पर आप डॉक्टर से परामर्श लेकर चिकित्सा करा सकते हैं।

लीवर कैंसर की चिकित्सा

उपचार कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे कैंसर का स्तर, आपकी उम्र और आपका सामान्य स्वास्थ। सर्जरी, रेडिएशन थेरेपी और कीमोथेरेपी प्रमुख उपचार विकल्प हैं। प्राय: इन तीनों को एक साथ मिलाकर उपयोग किया जाता है। सामान्यत: कोई अकेला ट्यूमर कैंसर जो लिम्फ नोड्स या दूसरे अंगों तक फैला नहीं हो, उसे सर्जरी से निकाला जा सकता है। हालांकि इस शुरुआती अवस्था में कम ही लीवर कैंसरों का पता लग पाता है। कुछ मामलों में, यकृत प्रत्यारोपण पर विचार किया जा सकता है। इसमें ट्यूमर्स की समस्या भी होती है। इसके अलावा कई तकलीफें साथ में बढ़ती जाती हैं।

उम्र बढ़ना एक एक प्राकृतिक और अपरिहार्य प्रक्रिया है, जिसे इंसान को हर हाल में स्वीकार करना होता है। उम्र बढ़ने के साथ ही आपके संपूर्ण स्वास्थ्य और जीवन में बहुत से बदलाव आते है, जिसे स्वीकार कर उसके अनुकूल अपने आप को ढालना पड़ता है।

बुढ़ापे की समस्याएं

शरीर में होने वाले बदलावों में विशेष तौर पर सेक्स क्षमता में कमी और मांस–पेशियों में बदलाव आता है। इसलिए आपको इसे स्वीकार कर इस परिवर्तन के साथ ही जीना पड़ेगा।

साध लेते हैं चुप्पी

अक्सर आदमी स्वास्थ्य संबंधी चर्चा होने पर चुप्पी साध लेता है। भावनाओं को दबाने से उसके दिमाग में एक तरह का भावनात्मक हलचल होता है और इससे तनाव, निराशा और चिंता में वृद्धि होती है। अपने घरेलू व अन्य समस्याओं का हल ढूंढने और उस पर सलाह–मशविरा करने के लिए अपने खास लोगों के साथ उसे शेयर करना चाहिए। अपनी भावनाओं को इस तरह दूसरे लोगों के साथ शेयर करने से व्यक्ति अपनी बढ़ती आयु से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से छुटकारा पा जाता है।

सकारात्मक सोचें

जीवन के प्रति हमेशा सकारात्मक सोच रखें और जीवन के मध्य अवस्था का सामना करने के लिए मानसिक तौर पर पहले से ही तैयारी कर लें। उम्र बढ़ने के साथ स्वास्थ्य में कई तरह का परिवर्तन होता है और इससे व्यक्ति के सेक्सुअल प्रदर्शन पर भी असर दिखने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने आप को असक्षम और अयोग्य समझने लगता है और एक तरह से हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। व्यक्ति में आत्मसम्मान में कमी, तनाव और निराशा जैसी बहुत सी बीमारियां मनोवैज्ञानिक समस्याओं के कारण पैदा होती है, जो आदमी के सेक्सुअल स्वास्थ्य को प्रभावित करने के साथ ही, उसके संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हैं।

शेयर करें समस्याएं

व्यक्ति को चाहिए की अपनी पत्नी के साथ अपनी समस्याओं को शेयर करे। संभव है कि वह उन समस्याओं का हल ढूंढने के लिए कोई उपाय बताए और इससे तनाव और निराशा की स्थिति से निकलने में मदद मिले।

भरपूर लें आहार

हमेशा पोषक तत्वों से भरपूर आहार लें और नियमित रूप से भोजन करें। प्रोसेस्ड और फैटी भोजन करने से परहेज करें और इसके बदले में प्रचुर मात्रा में ताजे फल और फाइबर युक्त आहार का सेवन करें।

एक्सरसाइज जरूरी

हर आयु में नियमित रूप से एक्सरसाइज करना जरूरी होता है, लेकिन जरूरत से ज्यादा एक्सरसाइज कर अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं कर हल्का–फुल्का एक्सरसाइज करना चाहिए। इससे शरीर के साथ दिमाग पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

ये भी रखें ध्यान

अपने वजन को हमेशा नियंत्रण में रखें। मोटापा एक साथ कई बीमारियों को निमंत्रण देता है। भोजन में पोषक तत्वों की कमी और कुपोषण से बचने के लिए मल्टीविटामिन्स और सप्लीमेंट लें। शरीर में किसी भी तरह का असहजता महसूस होने पर तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें। जीवन में काम–काजी बने, कुछ न कुछ शारीरिक श्रम अवश्य करते रहे।

युवाओं के दिल पर अटैक!

जवानी में तमाम लोगों के दिलों पर अटैक होता है, लेकिन आजकल के युवा हार्ट अटैक के भी शिकार हो रहे हैं। एक नई स्टडी में पता लगा है कि कम उम्र में इसके सबसे ज्यादा शिकार भारतीय युवा ही हैं।

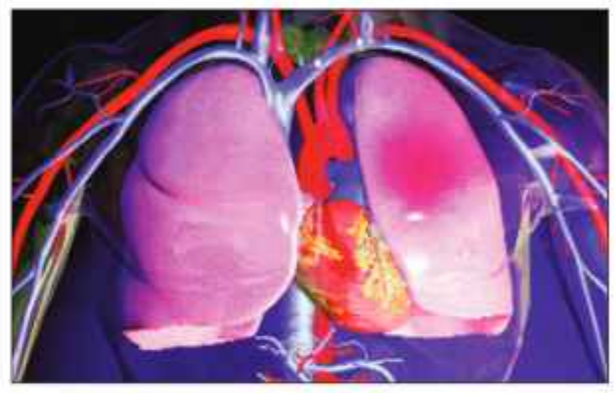

एक नए शोध से पता चलता है कि डिवेलप्ड कंट्रीज में जिस उम्र में हार्ट अटैक होता है, हमारे देश के लोग उसके 10 से 15 साल पहले इसके शिकार हो जाते हैं। गौरतलब है कि डिवेलप्ड कंट्रीज में 70 पर्सेंट हार्ट अटैक जहां 70 की उम्र के बाद होते हैं, वहीं हमारे देश में दो–तिहाई हार्ट अटैक 60 से कम उम्र वालों को होते हैं। हाल ही में आई एक स्टडी के मुताबिक, अब 30–40 की एज ग्रुप वालों का दिल भी सेफ नहीं है। मेडिकल साइंस की भाषा में यह एक्सट्रीमली प्रिमैच्योर स्टेज है।

दिल चाहता है नींद

हार्ट प्रॉब्लम की एक बड़ी वजह यंग इंडिया में नींद में कमी भी है। यंग प्रोफेशनल्स अक्सर अपनी नींद पूरी नहीं करते। अगर वे सोते भी हैं, तो उनका दिमाग अगले दिन के लिए चलता रहता है। दिनभर जो कुछ हुआ, वे उसे सोचते हैं और फिर दिमाग में अगले दिन की प्लानिंग चलती रहती है। इन सबके बीच कंफर्टेबल नींद का तो खात्मा ही हो जाता है। अच्छी नींद जरूरी है, आधी–अधूरी नहीं। जैसे कि रात को भी फोन बज रहा है, एसएमएस पढ़ रहे हैं। नींद की कमी से स्टैमिना खत्म होने लगता है और धड़कन तेज होने लगती है। बिजी लाइफस्टाइल की वजह से यूथ एक्सरसाइज भी नहीं कर पाते। इससे ब्लड प्रेशर भी बढ़ता है।

खासकर कॉल सेंटर जैसी नाइट शिफ्ट जॉब करने वालों की हालत तो और भी ज्यादा खराब है। वैसे तो उनके पास सोने के लिए दिन होता है, लेकिन तब वे दूसरे कामों में लगे रहते हैं और बस 2–4 घंटे की ही नींद लेते हैं। बकौल डॉ. चानना, हार्ट के लिए अच्छी नींद बेहद जरूरी है। यही वजह है कि आजकल 25, 28 और 32 साल की उम्र में हार्ट अटैक हो रहे हैं। नींद के लिए टाइम तो निकालना ही पड़ता है। लेकिन जब तक मेंटली फ्री नहीं होंगे, तब तक अच्छी नींद कैसे आएगी? रिसर्च बताती है कि 6 घंटे से कम सोने वालों को हार्ट अटैक होने की आशंका ज्यादा रहती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि नींद पूरी लेनी चाहिए।

मस्ती से आठ घंटे सोएं

एक्सपर्ट्स का मानना है कि 6 घंटे की नींद बेहद जरूरी है, लेकिन अगर आप चाहते हैं कि नेक्स्ट डे का काम फ्रेश होकर करें, तो 8 घंटे मस्ती से सोएं। लेकिन इसमें मेडिकेशन का स्कोप कम है और लाइफ स्टाइल इंप्रूवमेंट का रोल ज्यादा है। आपकी डाइट और मेंटल बैलेंस सब मिलकर ही अच्छी नींद देंगे। अगर आप रात को 11 बजे ओवरइटिंग करते हैं, तो आपको अच्छी नींद कहां से आएगी। गौरतलब है कि जो लोग ज्यादा सोते हैं, उनका दिल भी अच्छी हालत में नहीं रहता। लेकिन यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि ज्यादा देर तक सोना अक्सर फ्रैगमेंटेड स्लीप होता है। नींद पूरी न होने के कारण ही लोग देर तक सोते रहते हैं। इसलिए स्लीप क्वालिटी मेंटेन करने पर ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा स्नोरिंग पर भी नजर रखने की जरूरत है। जो लोग ज्यादा खर्राटे लेते हैं, उन्हें अपनी स्लीप स्टडी करानी चाहिए।

सिमटे रहने से दिल सेफ नहीं

एक ओपन हार्ट सर्जरी इंस्टीट्यूट के बाहर लिखा था, दिल खोल लेते अपना अगर यारों के साथ, तो आज न खोलना पड़ता औजारों के साथ ...। जी हां, अपने आप में सिमटे रहने से भी दिल सेफ नहीं रहता। क्योंकि इससे स्ट्रेस मैनेज नहीं हो पाता। इन दिनों 28 से लेकर 40 तक उम्र वाले हार्ट पेशंट ज्यादा हैं। इसका मेन रीजन यह माना जाता है कि हमारा जेनेटिक मेकअप ही ऐसा है। लेकिन यहां सवाल यह भी उठता है कि अगर जेनेटिक रीजन है, तो पहले यह प्रॉब्लम क्यों नहीं थी? दरअसल, पहले, दूसरे फैक्टर्स कंट्रोल में थे। डाइट और स्ट्रेस में ऐसा असंतुलन नहीं था। अब वेजिटेबल इनटेक कम हो गया है। सिर्फ मेट्रोज में ही नहीं, बल्कि छोटे शहरों में भी फिजिकल एक्टिविटीज कम होती जा रही है। ऐसे में यंगस्टर्स के लिए जरूरी है कि वे स्मोकिंग पर चेक रखें। रेग्युलर ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल चेक कराएं। हर हाल में मेंटल स्ट्रेस कम करें। ग्रुप्स में मिलना और आपस में चीजों को शेयर करना जरूरी है। वर्कप्लेस में भी ग्रुप में घुले–मिलें।

हार्ट अटैक की दो अवस्थाएं

यंग हार्ट अटैक की दो कैटेगिरीज हैं। एक वह जिनके पैरेंट्स को भी यंग एज में हार्ट अटैक की प्रॉब्लम हुई थी। दूसरे वे जो अपनी बिगड़ी हुई लाइफस्टाइल के चलते इसकी चपेट में आए। वजह चाहे जो भी हो, यूथ को अपने हार्ट की हेल्थ के लिए पहले से ही एक्टिव हो जाना चाहिए। अगर हेरेडिटरी प्रॉब्लम है, तो 40 की उम्र होते ही रेग्यूलर हेल्थ चेकअप कराना चाहिए। ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल लेवल का चेकअप बेहद जरूरी है। इन सबके अलावा यूथ में हार्ट अटैक के लिए स्मोकिंग भी जिम्मेदार है। रॉन्ग इटिंग हैबिट्स भी दिल को बीमार कर सकता है।

जंक फूड में ट्रांस फैटी एसिड

जंक फूड में ट्रांस फैटी एसिड होते हैं, जो हार्ट के लिए नुकसानदायक होते हैं। पिज्जा और बर्गर जैसे फूड की बजाय फ्रेश ग्रीन वेजिटेबल्स और कलरफुल फ्रूट्स खाना बेहतर रहेगा। दिनभर में कम से कम 5 बार कलरफुल फ्रूट्स और सलाद लें। दरअसल, इनमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स बैड कोलेस्ट्रॉल के लेवल को कम करते हैं। इसके अलावा ऑल्मंड और वॉलनट जैसे हेल्दी नट्स की 40–50 ग्राम क्वांटिटी हर रोज लेना चाहिए। दूसरे हर समय मोबाइल और कंप्यूटर से जुड़े रहने की वजह से यूथ की फिजिकल एक्टिविटी बहुत कम हो गई है। ऐसे में हफ्ते में पांच दिन 3–4 मील पैदल चलना फायदेमंद रहेगा। हर रोज 30–40 मिनट की ब्रिस्क वॉकिंग या वर्कआउट भी रुटीन में शामिल होना चाहिए।

रिस्क फैक्टर

- ओबेसिटी
- स्लीप डिसऑर्डर
- डायबिटीज
- एक्सरसाइज में कमी
- हाई कोलेस्ट्रॉल
- स्मोकिंग
- स्ट्रेस

यह भी करें

- हार्ट एक मसल है, इसलिए प्रोटीन रिच डाइट लें।
- स्ट्रेंथ बिल्डिंग एक्सरसाइज भी जरूरी है।
- हार्ट–स्पेसिफिक न्यूट्रिएंट्स लें।
- ग्रुप्स में घुले–मिलें। इससे स्ट्रेस कम होता है।

टाटा इलेक्ट्रा निक्स प्लांट में लगी आग का आईफोन बनने पर असर नहीं

नई दिल्ली ।

देश में त्योहारी सीजन शुरू होने के ठीक पहले टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के संयंत्र होसूर में शनिवार को लगी आग का आईफोन के विनिर्माण पर असर पड़ने की संभावना नहीं है। भारत में आईफोन16 सीरीज भी 20 सितंबर से देश में मिलने लगा है। ऐपल भारत में आईफोन का उत्पादन बढ़ाना चाहता है और उसकी इस योजना में होसूर संयंत्र अहम भूमिका निभाने जा रहा है। सूत्रों के अनुसार तमिलनाडु के श्रीपेरम्बुदूर में फॉक्सकॉन के असेंबली संयंत्रों में आईफोन के कलपुर्जों (एन्कलोजर) की कमी नहीं है। बेंगलूरु के नजदीक विस्ट्रॉन और चेन्नई के निकट पेगाट्रॉन

के संयंत्रों में भी ऐसे एन्क्लोजर की कोई कमी नहीं है। लिहाजा, आईफोन तैयार करने में रुकावट का कोई जोखिम नहीं है। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स ऐपल वेंडरों को कुल इन्क्लोजर का एक हिस्सा ही भेजती है और बाकी का अब भी आयात किया जाता है। ऐपल ने आवश्यकता महसूस होने पर अपने दूसरे आपूर्तिकर्ताओं से एन्क्लोजर मंगाने की आपात योजना तैयार कर रखी है। टाटा चीन को भी आईफोन बनाने में इस्तेमाल एन्क्लोजर की आपूर्ति करती है मगर इसका हिस्सा काफी कम है। एक सूत्र ने नाम नहीं बताने की शर्त पर कहा कि आईफोन तैयार करने वाले संयंत्रों में एन्क्लोजर की भरपूर संख्या है। इसे देखते हुए हुए आईफोन6 समेत किसी भी आईफोन के तैयार होने में कोई अड़चन नहीं है। हम विशेष परिस्थितियों के लिए भी एन्क्लोजर आयात करते हैं। इस मामले में टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और ऐपल को भेजे गए ई-मेल का कोई जवाब नहीं आया। सूत्रों ने कहा कि टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और ऐपल अब भी आग लगने के कारणों की पड़ताल कर रहे हैं। एन्क्लोजर बनाने वाले संयंत्र अक्सर रसायन और प्लास्टिक का भंडार रखते हैं, जो आग लगने का कारण हो सकते हैं। उत्पादन संयंत्र ऐसे जोखिमों से काफी सुरक्षित होते हैं।

एक ही दिन में 15 कंपनियों ने सेबी के पास जमा किए दस्तावेज

नई दिल्ली ।

वैश्विक उतार-चढ़ाव के बावजूद भारत के प्राथमिक बाजार में आईपीओ की लहर जारी है। बड़ी संख्या में कंपनियों के लिस्ट होने के साथ-साथ अभी भी कई कंपनियां कतार में हैं। इसी कड़ी में सितंबर के आखिरी दिन 15 कंपनियों ने भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड के पास आईपीओ लाने के लिए ड्राफ्ट पेपर जमा किए, जिनमें विक्रम सोलर, आदित्य इंफोटेक और वरिंडेरा कंस्ट्रक्शंस जैसी प्रमुख कंपनियां शामिल हैं। इन कंपनियों ने कुल मिलाकर 8,000 करोड़ रुपये से अधिक के आईपीओ की योजना बनाई है। बीते महीने में 41 कंपनियों ने आईपीओ के लिए ड्राफ्ट पेपर जमा किए, जो किसी एक महीने में सेबी के पास जमा होने वाला सबसे बड़ा आंकड़ा है। इसमें अलग-अलग सेक्टर की कंपनियां शामिल हैं, जो नए शेयरों के साथ-साथ ऑफर फॉर सेल इश्यू भी पेश कर रही हैं। वैश्विक उतार-चढ़ाव के बीच भारत के आईपीओ बाजार में तेजी जारी है। सोमवार को विक्रम सोलर, आदित्य इन्फोटेक, वरिंदरा कंस्ट्रक्शन सहित अजाक्स इंजीनियरिंग, राही इंफ्राटेक, विक्रम इंजीनियरिंग, मिडवेस्ट, विनी कॉरपोरेशन, संभव स्टील ट्यूब्स, जारो इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एंड रिसर्च, ऑल टाइम प्लास्टिक्स, स्कोडा ट्यूब्स और डेव एक्सेलेरेटर ने भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपने आईपीओ का ड्राफ्ट दाखिल किया। ये कंपनियां विस्तार की योजना, कर्ज चुकाने, वर्किंग कैपिटल की जरूरतों और मौजूदा शेयरहोल्डर्स के शेयर बेचने के लिए आईपीओ ला रही हैं। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि 30 सितंबर को 31 मार्च तक के ऑडिटेड फाइनेंशियल्स की अवधि समाप्त होने से पहले बड़ी संख्या में कंपनियों ने ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस जमा किए हैं। सितंबर में सूचीबद्ध 47 कंपनियों में से 61 प्रतिशत से अधिक अपने इश्यू प्राइस से ऊपर कारोबार कर रही हैं, जिसमें ट्रैवल्स एंड रेंटल्स का एसएमई आईपीओ 283 फीसदी की बढ़त के साथ सबसे आगे है। इसके बाद प्रीमियर एनर्जीज 146 फीसदी और नमो ईवेस्ट मैनेजमेंट 127फीसदी की बढ़त के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। आईपीओ में खुदरा निवेशकों की उत्साही भागीदारी ने विशेष रूप से एसएमई सेगमेंट में सदस्यता स्तर को अप्रत्याशित ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है, जहां खुदरा श्रेणी में पूरी तरह से सब्सक्राइब न होने वाला एसएमई आईपीओ खोजना अब दुर्लभ हो गया है।

दिल्ली में कार खरीदना और सस्ता हुआ

आतिशी सरकार दे रही 10-20 प्रतिशत की टैक्स छूट

नई दिल्ली ।

अरविंद केजरीवाल के बाद दिल्ली की मुख्यमंत्री बनीं आतिशी सिंह ने दिल्ली वासियों को एक बड़ी सौगात दी है। दिल्ली सरकार अपने पुराने वाहनों को कबाड़ घोषित करने का विकल्प चुनने वाले वाहन मालिकों को नए वाहनों की खरीद पर 10-20 प्रतिशत की टैक्स छूट देगी। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक मुख्यमंत्री आतिशी ने पुराने वाहनों को कबाड़ में बदलने की पहल को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है, इस नीति को जल्द ही अधिसूचित किया जाएगा। दिल्ली सरकार ने कहा कि सरकार अपने पुराने वाहनों को कबाड़ में बदलने का विकल्प चुनने वालों को तीन साल के भीतर नए वाहन खरीदने पर मोटर-वाहन कर में छूट के माध्यम से प्रोत्साहन देगी। बयान के मुताबिक इस प्रोत्साहन नीति के तहत नॉन-कमर्शियल सीएनजी और पेट्रोल वाहनों की खरीद पर 20 प्रतिशत, कमर्शियल सीएनजी और पेट्रोल वाहनों की खरीद पर 15 प्रतिशत और डीजल वाहनों पर 10 प्रतिशत की कर छूट मिलेगी। दिल्ली सरकार की इस नीति का उद्देश्य प्रदूषण फैलाने वाले पुराने वाहनों को सड़कों से हटाना है, ताकि कम प्रदूषण फैलाने वाले और बेहतर उत्सर्जन मानक वाले वाहनों के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा सके। इस योजना के तहत लाभ पाने के लिए व्यक्ति को अपना पुराना वाहन किसी पंजीकृत सुविधा केंद्र पर कबाड़ में देने पर जमा प्रमाणपत्र लेना होगा। वह तीन साल के भीतर नए वाहन के पंजीकरण के समय उस प्रमाणपत्र को दिखाकर कर में छूट पा सकेगा। दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण और पुराने वाहनों को खत्म करने के मकसद से दिल्ली और उसके आसपास से सटे राज्य पुरानी गाड़ियों को स्क्रैप कराने पर टैक्स में छूट का ऑफर दे रहे हैं। इससे पहले उत्तर प्रदेश सरकार ने भी एक आदेश जारी किया है जिसमें कहा गया है कि 2003 से पहले रजिस्टर्ड वाहनों के मालिकों को अपनी गाड़ी स्क्रैप कराने पर टैक्स में 75 फीसदी की छूट मिलेगी, जबकि 2008 से पहले पंजीकृत गाड़ियों को 50 फीसदी का डिस्काउंट मिलेगा।

दवाइयों, इंश्योरेंस और ट्रैक्टरों पर जीएसटी दर कम कर सकती है सरकार

नई दिल्ली ।

जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने के लिए बनी मंत्री स्तरीय समिति आम आदमी को बड़ी राहत दे सकती है। समिति कई दवाइयों, इंश्योरेंस और ट्रैक्टरों पर जीएसटी दर को कम करके 5 फीसदी तक कम करने पर विचार कर रही है। वर्तमान में ट्रैक्टरों पर 12 फीसदी या 28 फीसदी जीएसटी लगता है, जो उनके वर्गीकरण पर निर्भर करता है। ट्रैक्टरों से होने वाले कम राजस्व की भरपाई महंगे इलेक्ट्रिक वाहनों पर जीएसटी दर बढ़ाकर की जा सकती है।

हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस पर जीएसटी दर में कटौती होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य बीमा पर 18 फीसदी से घटाकर 12 फीसदी तक जीएसटी किया जा सकता है, जबकि टर्म इंश्योरेंस पर 5 फीसदी जीएसटी लगने की उम्मीद है। हालांकि, टर्म इंश्योरेंस पर जीएसटी शून्य करने की मांग कई दिनों से उठ रही है, लेकिन इससे बीमा कंपनियों को इनपुट टैक्स क्रेडिट का नुकसान हो सकता है. ऐसे में टर्म इंश्योरेंस पर 5 फीसदी जीएसटी का प्रस्ताव सबसे उपयुक्त माना जा रहा है। एक खबर के अनुसार मंत्री स्तरीय समिति जीएसटी की चार दरों को तीन में बदलने के पक्ष में नहीं है, लेकिन 12 फीसदी की दर वाली वस्तुओं की संख्या घटाने पर विचार हो रहा है।

कुछ वस्तुओं को 5 फीसदी के स्लैब में डाला जा सकता है, जबकि कुछ अन्य वस्तुएं 18 फीसदी के स्लैब में स्थानांतरित की जा सकती हैं। समिति इस महीने के अंत तक अपनी सिफारिशें स्पष्ट करेगी। 19 अक्टूबर को बीमा पर चर्चा के लिए बैठक होगी और 20 अक्टूबर को दर युक्तिकरण पर वस्तु-विशेष पर चर्चा की जाएगी।

रुपया गिरावट के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गुरुवार को भारतीय रुपया गिरावट के साथ 83.98 पर बंद हुआ। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव की चिंताओं के बीच घरेलू शेयर बाजारों में नकारात्मक धारणा के कारण रुपया शुरुआती कारोबार में 11 पैसे की गिरावट के साथ ही 83.93 प्रति डॉलर पर आ गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि पूंजी बाजारों से विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी के साथ ही अमेरिकी मुद्रा के मजबूत रुख से भी भारतीय रुपये पर दबाव आया है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया शुरुआती कारोबार में 83.91 प्रति डॉलर पर खुला। शुरुआती सौदों के बाद 83.93 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से 11 पैसे की गिरावट दिखाता है। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.82 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.10 फीसदी बढ़त के साथ 101.53 पर रहा। वहीं अंतरराष्ट्रीय मानक ब्रेंट क्रूड 1.11 फीसदी की बढ़त के साथ 74.72 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर रहा।

ब्रोकर को पैसा दिए बगैर शेयर खरीद-बेच पाएंगे निवेशक

नई दिल्ली ।

शेयर बाजार में निवेश करने वाले ग्राहकों के लिए 1 फरवरी से एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। पात्र शेयर ब्रोकरों को अपने ग्राहकों को शेयर खरीदने और बेचने के लिए यूपीआई आधारित ब्लॉक व्यवस्था का विकल्प देना होगा या फिर तीन सुविधाओं वाले कारोबारी खाते का प्रस्ताव देना होगा। यह कदम निवेशकों को अधिक सुरक्षा और पारदर्शिता प्रदान करेगा। यूपीआई आधारित ब्लॉक व्यवस्था के तहत निवेशक को पहले से अपने ब्रोकर को पैसा भेजने की जरूरत नहीं होगी। वह अपने बैंक खाते में धनराशि को ब्लॉक कर सकता है और उसी राशि के आधार पर शेयर बाजार में ट्रेडिंग कर सकता है। इससे उसकी राशि सुरक्षित रहती है और कोई दुरुपयोग नहीं होता। यह प्रक्रिया एएसबीए की तरह काम करेगी, जिसे पहले आईपीओ के लिए उपयोग किया जाता था। दूसरे विकल्प के तहत ग्राहकों को एक ऐसा खाता मिलेगा जिसमें तीन सुविधाएं जुड़ी होंगी- बचत खाता, डीमैट खाता और कारोबारी खाता। इस खाते में निवेशकों की धनराशि उनके बैंक खाते में सुरक्षित रहेगी और उस पर ब्याज भी मिलेगा। सेबी ने पहले आईपीओ जैसे सार्वजनिक निर्गमों के लिए ब्लॉक व्यवस्था शुरू की थी, जिसमें निवेशकों का पैसा उनके बैंक खाते में ही ब्लॉक कर दिया जाता है। अब इसे शेयर खरीदने और बेचने के लिए भी लागू किया जा रहा है, जिससे निवेशकों को अधिक सुविधाएं मिलेंगी। यह कदम निवेशकों के लिए बड़ा बदलाव साबित हो सकता है, खासकर उन लोगों के लिए जो शेयर बाजार में सुरक्षित और सुविधाजनक तरीके से निवेश करना चाहते हैं।

जुलाई-सितंबर में शीर्ष आठ शहरों में आवासीय बिक्री बढी

नई दिल्ली । भारत में मजबूत आवासीय मांग से आठ प्रमुख शहरों में जुलाई-सितंबर में मकानों की बिक्री सालाना आधार पर पांच प्रतिशत बढ़कर 87,108 इकाई हो गयी। एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई। रियल एस्टेट के एक सलाहकार ने गुरुवार को एक वेबिनार के जरिये 2024 कैलेंडर वर्ष की तीसरी तिमाही के लिए अपनी रिपोर्ट इंडिया रियल एस्टेट जारी की। इसमें एनारॉक और प्रॉपइक्विटी द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के विपरीत आवासीय बिक्री में मामूली वृद्धि की बात कही गई। एनारॉक और प्रॉपइक्विटी की रिपोर्ट में देश के प्रमुख शहरों में जुलाई-सितंबर में कुल बिक्री में गिरावट की बात सामने आई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि आवासीय बाजार में 2024 में गति अच्छी रही। 2024 की तीसरी तिमाही में इस साल की सर्वाधिक 87,108 इकाइयों की बिक्री दर्ज की गई है।

वाहन निर्माताओं को अक्टूबर पर भरोसा, 40 फीसदी तक बिक्री की उम्मीद

मुंबई। वाहन निर्माताओं को अक्टूबर महीने पर भरोसा है। इसमें नवरात्रि, दशहरा और दिवाली शामिल हैं। उनका कहना है कि वार्षिक बिक्री की 30 से 40 फीसदी बिक्री इन्हीं दिनों पर होती है। कार निर्माता मौसमी मांग में वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं। होंडा मोटर, ह्युंडई, महिंद्रा एंड महिंद्रा और मारुति सुजुकी जैसे वाहन निर्माता सुस्त बिक्री को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक कदम उठा रहे हैं। मांग को बढ़ाने के लिए वाहन निर्माताओं के पास तीन मुख्य रणनीति हैं। इनमें नए मॉडल लॉन्च करना, पर्याप्त छूट देना और कीमतों में कटौती लागू करना। कई कंपनियां ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए पहले ही छूट दे चुकी हैं। टाटा मोटर्स और जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर ने चुनिंदा मॉडलों पर ऑफर बढ़ा दिए हैं। मारुति सुजुकी ने पहले ही कई मॉडलों की कीमतों में कटौती की। ऑल्टो के10 और एस-प्रेसो पर 40,000 तक की छूट, वैगनआर पर 30,000 तक का ऑफर, नेक्सा शोरूम में जिम्नी पर 2.5 लाख की छूट, पुराने वाहनों को स्क्रैप करने पर 15,000 रुपये का एक्सचेंज बोनस है। वहीं ह्युंडई की ग्रैंड आई10 निओस पर 35,000 रुपये तक छूट, ऑरा सेडान पर 30,000 रुपये तक छूट, वेन्यू एसयूवी पर 45,000 तक फायदा है। वहीं महिंद्रा एंड महिंद्रा ने अगस्त में स्कॉर्पियो क्लासिक एसयूवी पर छूट को बढ़ाकर 1,00,000 रुपये किया गया है। थार पर छूट बढ़कर 1,50,000 रुपये हो गई है। वहीं होंडा की अमेज सेडान पर फायदा बढ़कर 1,12,000 रुपये, सिटी सेडान पर 1,14,000 रुपये की छूट मिल रही है। टाटा मोटर्स की छूट इस महीने के अंत तक है।

जंग की आहट से सहमा बाजार , सेंसेक्स में 1,769 अंकों की रिकार्ड गिरावट

निफ्टी 546 अंक गिरा

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार गुरुवार को भारी गिरावट पर बंद हुआ। मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के कारण दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों से बाजार में ये गिरावट आई है। आज कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक के शेयर नीचे आये। लगातार विदेशी कोषों की निकासी और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों से भी निवेशकों ने बाजार से दुसरी बनायी है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1769.19 अंक करीब 2.10 फीसदी नीचे आकर 82,497.10 पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 546.80 अंक तकरीबन 2.12 फीसदी नीचे आकर 25,250.10 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 29 शेयर गिरे हैं। इनमें लार्सन एंड टुब्रो, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एक्सिस बैंक, एशियन पेंट्स, टाटा मोटर्स, बजाज फाइनेंस, मारुति, बजाज फिनसर्व, कोटक महिंद्रा बैंक, टाइटन, अदाणी पोर्ट्स और एचडीएफसी बैंक के शेयर शामिल रहे। केवल एक शेयर जेएसडब्ल्यू स्टील है ही ऊपर आया। बाजार जानकारों के अनुसार ईरान और इजराइल के बीच युद्ध की आशंका के कारण दुनिया भर के बाजारों में घबराहट का माहौल है। इसी का प्रभाव भारतीय बाजार पर भी पड़ा है। वहीं अमेरिका में मंदी की आशंका बढ़ गई है, जिसके कारण पिछले कारोबारी दिन अमेरिकी बाजार में गिरावट रही। इसका असर दुनियाभर के बाजारों में दिख रहा है।

वहीं एशियाई बाजार में जापान के निक्के केई में 2.24 फीसदी की तेजी रही है जबकि हांगकांग के इंडेक्स में 2.43 फीसदी और कोरिया के कोस्पी इंडेक्स में 1.22 फीसदी की गिरावट है। अमेरिका का डाओ जोंस 0.09 फीसदी ऊपर आकर 42,196 पर और नैस्डैक 0.08 फीसदी उछलकर 17,925 पर बंद हुआ। एसएंडपीए 500 भी 0.01 फीसदी बढ़कर 5,709 पर बंद हुआ। विदेशी निवेशकों ने 5,579 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपी, एएसएक्स 200 भी 0.25 फीसद ऊपर कारोबार करता दिखा। वहीं मंगलवार को बाजार हल्की गिरावट से बंद हुआ था। इससे पहले आज सुबह बड़ी गिरावट देखने को मिली। सेबी के नए नियमों और मिडिल ईस्ट में जारी संघर्ष का सीधा असर निवेशकों पर पड़ा है, जिससे भारी बिकवाली का माहौल बना। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का सेंसेक्स 1,264 अंक गिरकर 83,002.09 पर खुला। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 266 अंक की गिरावट के साथ 25,530 पर खुला। शुरुआती कारोबार में निफ्टी के 50 में से 44 शेयर लाल निशान पर, जबकि सिर्फ 6 शेयर हरे निशान में थे। इसी तरह सेंसेक्स के 30 शेयरों में से केवल 3 शेयर हरे निशान पर और 27 शेयर लाल निशान पर कारोबार कर रहे थे।

गरुड़ कंस्ट्रक्शन एंड इंजीनियरिंग का आईपीओ आठ को खुलेगा

नई दिल्ली । गरुड़ कंस्ट्रक्शन एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड ने 264 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 92-95 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। कंपनी ने गुरुवार को घोषणा की कि उसका आईपीओ आठ अक्टूबर को खुलेगा और 10 अक्टूबर को बंद होगा। आईपीओ दस्तावेज के अनुसार, निर्गम 1.83 करोड़ के ताजा शेयर और प्रवर्तक पीकेएच वेंचर्स द्वारा 95 लाख शेयर की बिक्री पेशकश (ओएफएस) का संयोजन है। इससे उच्च दायरे के तहत आईपीओ की कीमत 264 करोड़ रुपये बैठती है। कंपनी इस नए निर्गम से हासिल 100 करोड़ रुपये तक की राशि का इस्तेमाल कार्यशील पूंजीगत आवश्यकताओं के लिए करेगी। शेष राशि का इस्तेताल विलय व अधिग्रहण सहित सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा।

बायोकॉन ने 1.1 अरब डॉलर के दीर्घकालिक ऋण का किया पुनर्वित्तपोषण

नई दिल्ली । बायोकॉन बायोलॉजिक्स ने डॉलर बॉण्ड और नई सामूहिक सुविधा के जरिये 1.1 अरब अमेरिकी डॉलर (9,347 करोड़ रुपये) के दीर्घकालिक ऋण का पुनर्वित्तपोषण किया है।बायोकॉन की इकाई बायोकॉन बायोलॉजिक्स ने बयान में कहा कि बॉण्ड बायोकॉन बायोलॉजिक्स ग्लोबल पीएलसी द्वारा जारी किए जाएंगे, जो कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी है। इसे एक मजबूत सुरक्षा पैकेज द्वारा समर्थित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह लेनदेन नौ अक्टूबर 2024 को पारंपरिक समापन शर्तों के अधीन निपटाए जाने की उम्मीद है। बायोलॉजिक्स के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि यह रणनीतिक पुनर्वित्तपोषण वित्तीय जुझारूपन को बढ़ाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। बायोकॉन बायोलॉजिक्स की दीर्घकालिक वृद्धि को बढ़ावा देता है और हमारे व्यवसाय के समेकन चरण का मूल है। उन्होंने कहा कि कंपनी को उम्मीद है कि इस लेनदेन से पूंजी संरचना मजबूत होगी और उसे व्यवसाय में निवेश को पुनः स्थापित करने में मदद मिलेगी। इसमें बायोसिमिलर की हमारी पाइपलाइन को आगे बढ़ाना भी शामिल है।

अमेरिका-भारत सीईओ फोरम ने द्विपक्षीय व्यापार, वाणिज्य बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई

वाशिंगटन ।

अमेरिका-भारत सीईओ मंच ने द्विपक्षीय व्यापार तथा वाणिज्य का विस्तार करने, समावेशी आर्थिक वृद्धि और नवाचार को बढ़ाने के साथ मजबूत साझेदारी को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। मुख्य कार्यपालक अधिकारियों (सीईओ) के इस मंच की सह-अध्यक्षता अमेरिकी वाणिज्य मंत्री जीना रायमोंडो और केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने की।मंच का छठा संस्करण बुधवार को अमेरिकी राजधानी में आयोजित किया गया।यह एक ऐसा मंच है जो द्विपक्षीय वाणिज्यिक संबंधों को मजबूत करने तथा दोनों देशों के बीच व्यापार व निवेश का विस्तार करने के उद्देश्य से संयुक्त सिफारिशें करने के लिए अमेरिका और भारत के व्यापार जगत के लोगों को एक साथ लाता है।लॉकहीड मार्टिन के सीईओ एवं अध्यक्ष जेम्स टेसलेट और टाटा संस के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन 2023-2024 के लिए निजी क्षेत्र के सह-अध्यक्ष हैं। बैठक के दौरान, रायमोंडो और गोयल ने पिछले दो वर्षों में मंच के सदस्यों द्वारा की गई सिफारिशों और उनकी पहलों की सराहना भी की। गोयल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर

लिखा कि भारत-अमेरिका सीईओ मंच में दोपहर के भोजन पर अमेरिकी वाणिज्य मंत्री रायमोंडो के साथ एक सार्थक बैठक हुई। हमारी चर्चा रक्षा, अंतरिक्ष, सेमीकंडक्टर, दूरसंचार, एआई (कृत्रिम मेधा) और स्वच्छ ऊर्जा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी तथा अनुसंधान व विकास सहयोग की संभावनाओं पर केंद्रित रही।

सितंबर में 47 कंपनियों ने आईपीओ से जुटाए 16152 करोड़

नई दिल्ली । निवेशकों के जबरदस्त उत्साह के चलते सितंबर में आईपीओ से 47 कंपनियों ने 16,152 करोड़ रुपये जुटाए हैं। इसमें से 13 मुख्य प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध हुई हैं। एक्सचेंजों के आंकड़ों के मुताबिक, 13 प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम यानी आईपीओ में बजाज हाउसिंग ने सर्वाधिक 6,560 करोड़ व प्रीमियर एनर्जीज ने 2,830 करोड़ जुटाए। 34 कंपनियां छोटी एवं मझोली यानी एसएमई थीं। 47 कंपनियों में से 61 फीसदी के शेयर इश्यू भाव से ऊपर कारोबार कर रहे हैं। ट्रैवल्स एंड रेंटल्स का एसएमई आईपीओ 283 फीसदी लाभ के साथ सबसे आगे है। प्रीमियर एनर्जीज 146 फीसदी के साथ दूसरे स्थान पर है।आईपीओ में खुदरा निवेशकों की उत्साही भागीदारी ने एसएमई में सदस्यता स्तर को आश्चर्यजनक ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। इस साल के आठ महीनों में आईपीओ बाजार तीन गुना बढ़ा है। इस अवधि में 227 आईपीओ सूचीबद्ध हुए। इन्होंने 12.2 अरब डॉलर जुटाए। 2023 में इसी अवधि के दौरान महज 4.3 अरब डॉलर की रकम जुटाई गई थी।

आईपीएल का यह नियम सिर्फ धोनी के लिए बना है: दिनेश कार्तिक का बड़ा बयान

दुबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक ने आईपीएल गवर्निंग बॉडी के उस फैसले का पूरा समर्थन किया है जिसमें एमएस धोनी को आगामी सीजन में 'अनकैप्ड' क्रिकेटर के तौर पर खेलने की अनुमति दी गई है। नए रिटेंशन नियमों के अनुसार, कोई भी खिलाड़ी जिसने पिछले पांच सालों में भारत के लिए नहीं खेला है, उसे 'अनकैप्ड' माना जाएगा और उसे काफी कम कीमत पर रिटेन किया जा सकता है। यह चेन्नई सुपर किंग्स के लिए अच्छी खबर है, जो इस नियम का इस्तेमाल पूर्व कप्तान एमएस धोनी को रिटेन करने के लिए कर सकते हैं और कार्तिक का मानना है कि यह नियम 'सिर्फ एक व्यक्ति के लिए' बनाया गया था।

उन्होंने कहा, 'हर कोई इसके बारे में बात करता है। यह नियम एक व्यक्ति के लिए बनाया गया है और मैं इसके लिए पूरी तरह से तैयार हूं। यह व्यक्ति आईपीएल के इस इतिहास का एक बड़ा हिस्सा रहा है। अगर हर कोई खुश है - चाहे वह बीसीसीआई हो, कोई भी टीम हो, चाहे लीग ने पिछले कुछ सालों में कैसा प्रदर्शन किया हो और पिछले 15-18 सालों में इसने खिलाड़ियों को कितना खुश रखा हो, इस व्यक्ति ने इसमें अहम भूमिका निभाई है।'

उन्होंने कहा, 'आप किसी भी टीवी ब्रॉडकास्टर से पूछ सकते हैं और आपको जवाब मिलेगा कि जब यह व्यक्ति मैदान पर उतरता है, तो रेटिंग बढ़ जाती है। यह एक तथ्य है। अगर आप कुछ ऐसा करने जा रहे हैं जिससे लीग को मदद मिलेगी, तो क्यों नहीं? आप नियमों को तोड़ना नहीं चाहते, लेकिन अगर यह निष्पक्ष है, जहां सभी टीमों को सूचित किया गया है और उन्हें लगता है कि यह निष्पक्ष है, तो चलिए आगे बढ़ते हैं। क्यों नहीं? वह एक खास क्रिकेटर है।'

धोनी ने 2020 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, लेकिन उन्होंने भारत के लिए आखिरी बार जुलाई 2019 में खेला था। उनका आखिरी मैच 2019 वनडे विश्व कप सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ था, जिसमें भारत हार गया था। आईपीएल के एक बयान में कहा गया है, 'एक कैप्ड भारतीय खिलाड़ी अनकैप्ड हो जाएगा, अगर उसने संबंधित सीजन के आयोजन से पहले पिछले पांच कैलेंडर वर्षों में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट (टेस्ट

मैच, वनडे, ट्वेंटी20 इंटरनेशनल) में नहीं खेला है या उसके पास बीसीसीआई के साथ केंद्रीय अनुबंध नहीं है। यह केवल भारतीय खिलाड़ियों के लिए लागू होगा।'

102 डिग्री बुखार के बावजूद की बल्लेबाजी, भारतीय बल्लेबाज को ले जाना पड़ा अस्पताल

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई और शेष भारत के बीच ईरानी कप मैच के दूसरे दिन के खेल के तुरंत बाद मुंबई के ऑलराउंडर शार्दुल ठाकुर को तेज बुखार के कारण लखनऊ के एक स्थानीय अस्पताल में ले जाया गया। एक रिपोर्ट अनुसार ठाकुर ने बीमारी से जूझते हुए सरफराज खान के साथ मिलकर नौवें विकेट के लिए 73 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी में 36 रनों का योगदान दिया। जब वह क्रीज पर थे तो उन्हें 102 डिग्री बुखार था।

पहले दिन ठाकुर में बीमारी के लक्षण दिखाई देने लगे थे, उन्हें हल्का बुखार था। हालांकि दूसरे दिन करीब दो घंटे बल्लेबाजी करने के बाद उनकी हालत बिगड़ गई। ऑलराउंडर को पारी के दौरान दो बार ब्रेक लेना पड़ा, जिसके दौरान टीम के डॉक्टर ने उनका इलाज किया। अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के बावजूद ठाकुर ने आगे बढ़कर अपनी टीम के लिए काम किया और अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखी। उनकी शानदार पारी के बाद मुंबई टीम प्रबंधन ने उन्हें पास के अस्पताल में ले जाने का फैसला किया, जहां उन्हें रात भर निगरानी में रखा जाएगा।

मेडिकल टीम ठाकुर की स्थिति पर बारीकी से नजर रख रही है, डॉक्टरों द्वारा उनका मूल्यांकन करने के बाद तीसरे दिन के लिए उनकी फिटनेस पर निर्णय लेने की उम्मीद है। एक सूत्र के हवाले से इंडियन एक्सप्रेस ने लिखा ठाकुर पूरे दिन कमजोर महसूस कर रहे थे, लेकिन बुखार के बावजूद उन्होंने बल्लेबाजी करने पर जोर दिया। मलेरिया और डेंगू जैसी संभावित बीमारियों के लिए मेडिकल टेस्ट किए गए और मैच में उनकी आगे की भागीदारी के बारे में कोई भी निर्णय लेने से पहले टीम नतीजों का इंतजार कर रही है। ठाकुर ने 59 गेंदों पर एक छक्का और चार चौके लगाए। उन्होंने सावधानी से खेला, जल्दबाजी में शॉट लगाने से बचते हुए सरफराज खान का साथ देने की कोशिश की, जो दूसरे दिन के अंत में 221 रन बनाकर नाबाद रहे।

अश्विन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है: पाकिस्तान के महान खिलाड़ी ने माना

स्पोर्ट्स डेस्क। दो दिन बारिश में धुल जाने के बावजूद बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर टेस्ट में भारत की जीत न केवल एक बार फिर टीम के कौशल और अजेय स्वभाव को उजागर करती है, बल्कि यह भी बताती है कि रोहित शर्मा और उनके लड़के शीर्ष पर पहुंचने के बाद भी कैसे बने रहते हैं। कई अन्यों की तरह पाकिस्तान के पूर्व कप्तान रमीज राजा भी इस विशेषता के लिए भारतीय टीम से प्रभावित हैं। इसी के साथ ही वह रविचंद्रन अश्विन के काफी प्रभावित दिखे और कहा कि उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

रमीज ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस समय घरेलू मैदान पर टीम इंडिया को हराना सबसे कठिन है। लेकिन रोहित शर्मा की कप्तानी में टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए जो चीज और भी बेहतर बनाती है, वह है विदेशों में जीत। वे न केवल विदेशों में प्रतिस्पर्धी हैं, बल्कि मैच भी जीतते हैं, जिसकी वजह से भारत ने अपना दबदबा स्थापित किया है।'

भारत ने दो टेस्ट मैचों की सीरीज 2-0 से अपने नाम की। मेजबान टीम ने चेन्नई में पहला टेस्ट 280 रन से और दूसरा सात विकेट से जीता। पाकिस्तान की 1992 विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा रहे रमीज ने रविचंद्रन अश्विन की उनके हरफनमौला कौशल के लिए विशेष प्रशंसा की। अश्विन ने पहले टेस्ट में शतक बनाया और साथी स्पिन-बॉलिंग ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा के साथ साझेदारी में महत्वपूर्ण रन जोड़े। इसके बाद अश्विन ने बांग्लादेश की दूसरी पारी में छह विकेट लेकर भारत की बड़ी जीत पूरी की।

रमीज ने कहा, 'एक ऑलराउंडर के तौर पर उन्हें (अश्विन को) उतना सम्मान नहीं मिला, जितना मिलना चाहिए। अगर आप उनके रिकॉर्ड को देखें, तो वे किसी से कम नहीं है...वे एक सीधे-सादे क्रिकेटर है, हर चीज को अपने हिसाब से लेते हैं। यहां तक कि जब वे 12वें खिलाड़ी होते हैं या टीम से बाहर होते हैं, तो भी वे किसी तरह का गुस्सा नहीं दिखाते। वे टीम की स्थिति और अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं। जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे शानदार खेलते है....अश्विन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। इसी तरह जडेजा भी हैं, जो महत्वपूर्ण मौकों पर अपनी टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करते हैं।'

ईरानी कप : सरफराज ने 15वीं तो अभिमन्यु ईश्वरन ने ठोकी 26वीं सेंचुरी, ईशान किशन भी चमके

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ के श्री अटल बिहारी वाजपेयी एकाना स्टेडियम में मुंबई के खिलाफ खेलते हुए रैस्ट ऑफ इंडिया टीम ने भी जोरदार शुरूआत की है। दो दिन तक खेलने वाली मुंबई टीम ने पहली पारी में सरफराज खान के 222 रनों की बदौलत 537 रन बनाए थे जिसके जवाब में अभिमन्यू ने शतक लगाकर 50 ओवर के अंदर ही अपनी टीम को 200 रन पार करवा दिए। अभिमन्यू का यह शतक तब सामने आया है जब मुंबई की ओर से सरफराज ने दोहरा शतक जड़ा था। यह दोनों प्लेयर प्रथम श्रेणी में शानदार रिकॉर्ड रखते हैं। सरफराज ने जहां प्रथम श्रेणी का अपना 15वां शतक जड़ा है तो वहीं, अभिमन्यू भी अब 26 शतक जड़ चुके है।

मुंबई : 537-10 (141 ओवर)

मुंबई की शुरूआत खराब रही थी। 12वें ओवर के अंदर ही मुंबई ने 37 रन पर 3 विकेट गंवा लिए थे। पृथ्वी

ने 4, अयुष 19 तो हार्दिक 0 पर आऊट हो गए। लेकिन तभी कप्तान अजिंक्य रहाणे ने एक छोर संभाला और श्रेयस अय्यर (57) के साथ मिलकर पारी को आगे बढ़ाया। रहाणे शतक लगाने से चूक गए। उन्होंने 234 गेंदों पर 7 चौके और 1 छक्के की मदद से 97 रन बनाए। इस दौरान सरफराज खान का उन्हें बाखूबी साथ मिला। सरफराज ने रहाणे के आऊट होने के बाद तनुष कोटियन (64) के साथ मिलकर स्कोर आगे बढ़ाया। अंत में शार्दुल ठाकुर ने बीमारी के बावजूद 59 गेंदों पर 36 रन बनाए। सरफराज 286 गेंदों पर 25 चौके और 4 छक्कों की मदद से 222 रन बनाने में सफल रहे और टीम स्कोर 537 तक पहुंचा दिया। रैस्ट ऑफ इंडिया की ओर से मुकेश कुमार ने 30 ओवर में 110 रन देकर 5 विकेट लें। यश दयाल और प्रसिद्ध कृष्णा ने 2-2 विकेट लें।

रैस्ट ऑफ इंडिया

जवाब में रैस्ट ऑफ इंडिया की शुरूआत भी खराब रही। जब कप्तान ऋतुराज गायकवड़ मात्र 9 रन बनाकर आऊट हो गए। साईं सुदर्शन भी 79 गेंदों पर 32 रनों का ही सहयोग कर पाए। लेकिन इस दौरान एक छोर संभाले खड़े अभिमन्यु ईश्वरन ने ताबड़तोड़ शॉट लगाए। उन्होंने रन रेट का समान बनाए रखा और 80 की स्ट्राइक रेट से अपना शतक पूरा किया। इस दौरान उन्हें देवदत्त पड्डिकल और ईशान किशन ने भी सहयोग किया।

हरभजन ने रोहित को इस कारण धोनी से बेहतर कप्तान बताया

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर रहे हरभजन सिंह ने कहा है कि रोहित शर्मा कुछ मामलों में पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी से भी बेहतर कप्तान साबित हुए हैं। हरभजन ने कहा कहा, मैंने रोहित को धोनी से अधिक वरीयता इसलिए दी है क्योंकि रोहित खिलाड़ियों के कप्तान हैं। वह खिलाड़ियों के पास जाते हैं और उनसे पूछते हैं कि उन्हें क्या चाहिए। उनके साथी खिलाड़ी उनसे बहुत अच्छी तरह से जुड़ते हैं पर धोनी का अंदाज अलग था। धोनी किसी से बात नहीं करते थे। वह बिना बोले ही शांत रहकर अपने विचार व्यक्त करते थे। दूसरों से बात करने का यही उनका तरीका था। साथ ही कहा कि धोनी और रोहित पूरी तरह से अलग-अलग तरह के कप्तान हैं। धोनी कभी भी किसी खिलाड़ी को कहां क्षेत्ररक्षण करना है नहीं पूछते थे। वह सभी को अपनी गलतियों से सीखने का अवसर देते थे। धोनी तीन बार आईसीसी खिताब जीतने वाले एकमात्र भारतीय कप्तान हैं, जबकि रोहित ने भारत को अब तक एक बार ही टी20 विश्व कप जिताया है।

टेस्ट प्रारुप को लोकप्रिय बना रहे बुमराह, शमी सहित ये पांच गेंदबाज : जहीर

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व तेज गेंदबाज तेज गेंदबाज जहीर खान ने कहा कहा है कि टेस्ट प्रारुप को एक बार फिर लोकप्रिय बनाने में जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी, कैगिसो रबाडा, पैट कमिंस और जोश हेजलवुड जैसे गेंदबाजों की अहम भूमिका रही है। ये सभी जहीर के पसंदीदा गेंदबाज हैं। जहीर का कहना है कि इन गेंदबाजों के प्रदर्शन से टेस्ट मैचों में रोमांच बढ़ रहा है क्योंकि टेस्ट के परिणाम निकल रहे हैं। जहीर ने कहा कि भारत ने लगातार दो विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल खेले हैं और वह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से एक है। इसलिए बुमराह और शमी मेरे पसंदीदा खिलाड़ियों में शामिल हैं। इसके अलावा, मैं रबाडा और हेजलवुड और कमिंस को शामिल करुंगा। इन गेंदबाजों ने टेस्ट प्रारुप को अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया है। बुमराह और शमी ने तीनों प्रारूपों में भारतीय टीम के लिए मैच जीते हैं। बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज में बुमराह ने भारतीय टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। वहीं शमी टखने की सर्जरी से उबर गये हैं और बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024 में वह खेलते नजर आयेंगे। शमी ने अब तक 64 टेस्ट, 229 विकेट लिए हैं जबकि बुमराह ने 38 टेस्ट में 170 विकेट लिए हैं। वहीं रबाडा ने 64 टेस्ट में 299 विकेट लिए हैं। हेजलवुड के नाम 70 टेस्ट में 273 विकेट और कमिंस के नाम 62 टेस्ट में 269 विकेट, हैं। जहीर ने भारतीय टीम के कोच गौतम गंभीर की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह हमेशा जीतना चाहते हैं क्योंकि वह क्रिकेट को सबसे अधिक पसंद करते हैं।

महिला टी20 विश्व कप शुरू, निगार सुल्ताना ने पहले ही मुकाबले में बनाया रिकॉर्ड

खेल डैस्क। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2024 का उद्घाटन मुकाबला बांग्लादेश और स्कॉटलैंड के बीच खेला गया, जोकि निगार सुल्ताना का 100वां टी20 मैच भी है। निगार टूर्नामेंट के नौवें संस्करण में बांग्लादेश टीम का नेतृत्व कर रही है। सुल्ताना ने 2015 में पाकिस्तान के खिलाफ अपना टी20ई डेब्यू किया। उन्होंने बहुत कम समय में खुद को बल्लेबाजी इकाई में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया। वह 2016 महिला टी20 विश्व कप में बांग्लादेश की अग्रणी रन-स्कोरर थीं। निगार सुल्ताना का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नाबाद 113 रन है जिससे वह टी20ई में शतक बनाने वाली पहली बांग्लादेशी क्रिकेटर बनी थी। उस मैच में फरगना हक के साथ तीसरे विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड भी उनके नाम है, जो आज भी कायम है। उनके उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। एक सक्षम विकेटकीपर-बल्लेबाज, सुल्ताना 2020 महिला टी20 विश्व कप में बांग्लादेश की अग्रणी रन-स्कोरर भी थीं, जिन्होंने चार पारियों में 114 रन बनाए। जनवरी 2022 में, उन्हें मलेशिया में राष्ट्रमंडल खेल क्रिकेट क्वालीफायर टूर्नामेंट के लिए बांग्लादेश टीम का कप्तान नियुक्त किया गया था। सुल्ताना ने 2022 महिला टी20 विश्व कप क्वालीफायर में बांग्लादेश की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने दो अर्धशतक सहित 5 पारियों में 180 रन के साथ टीम की शीर्ष रन-स्कोरर रही। उसी टूर्नामेंट के दौरान, वह टी20ई में 1,000 रन पूरे करने में सफल रहीं। सुल्ताना ने बल्ले और स्टंप के पीछे दोनों में विशिष्टता हासिल की है और अपने 100 मैचों में 8 अर्द्धशतक और एक शतक सहित 1,900 से अधिक रन बनाए।

विनेश फोगाट के बारे में बोली मैरीकॉम, वजन का प्रबंधन करना एथलीट की जिम्मेदारी है

मुंबई (एजेंसी)। छह बार की विश्व चैम्पियन मुक्केबाज एम सी मैरीकॉम ने बृहस्पतिवार को पेरिस ओलंपिक में 100 ग्राम से अधिक वजन होने के कारण पहलवान विनेश फोगाट को हुई निराशा को लेकर इस विवाद पर कहा कि निर्धारित सीमा के भीतर वजन बनाये रखना खिलाड़ी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है।

चार बच्चों की मां और ओलंपिक कांस्य पदक विजेता मैरीकॉम (42 वर्ष) ने यहां एक कार्यक्रम के इतर पहली बार विनेश के बारे में बोलते हुए कहा कि पेरिस ओलंपिक में समय सीमा में वजन का प्रबंधन करना एथलीट की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा, 'मैं इतनी निराश हुई थी कि मैंने भी पिछले इतने वर्षों से यही वजन प्रबंधन किया है। वजन महत्वपूर्ण होता है, यह मेरी जिम्मेदारी है। मैं किसी अन्य को दोषी नहीं ठहरा सकती।'

मैरीकॉम ने कहा, 'मैं उसके (विनेश) मामले में यह नहीं कहना चाहती हूं। मैं यह सिर्फ अपने मामले में ही कह रही हूं। अगर मैं अपना वजन ही सही तरह से नहीं घटा पाऊंगी तो मैं कैसे खेलूंगी? मैं वहां पदक जीतने के लिए थी, मुझे ऐसा ही लगता है।' मैरीकॉम पहले भी अपने वजन कम करने का रूटीन बता चुकी हैं कि यह प्रक्रिया कितनी मुश्किल हो सकती है। मणिपुर की इस मुक्केबाज ने पिन वेट (46 किग्रा) वर्ग से शुरूआत की और फिर अपने अमेच्योर कैरियर में फ्लाईवेट (51 किग्रा) वजन में खेलने लगीं।

पेरिस में स्वर्ण पदक दावेदार मानी जा रही विनेश ने खाना पीना छोड़कर पूरी रात 'वर्कआउट' किया और अपने बाल भी कटाए लेकिन फिर भी वह 100 ग्राम से चूक गईं। मैरीकॉम खेल मंत्री मनसुख मांडविया से भारतीय मुक्केबाजी पर चर्चा करना चाहती हैं क्योंकि वह पेरिस ओलंपिक में देश के मुक्केबाजी अभियान से अब तक नाखुश हैं। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रीय महासंघ और खेल मंत्री से मिलकर बात करके समझना चाहती हूं कि 'किस चीज की कमी' हो रही है।

भारतीय मुक्केबाजी दल में दो बार की विश्व चैम्पियन निकहत जरीन और ओलंपिक कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन शामिल थीं लेकिन देश के नाम एक भी पदक नहीं हो सका। लंदन 2012 ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर भारत को ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली महिला मुक्केबाज बनी मैरीकॉम ने कहा, 'हम नतीजा जानते हैं, यह बहुत बुरा था। मैं जानना चाहती हूं कि किस चीज की कमी है।'

राज्यसभा की पूर्व सदस्य मैरीकॉम कहा, 'अगर जरूरत पड़ी तो मैं मुक्केबाजों से भी मिलूंगी। अगर खेल मंत्री को इसकी जानकारी है तो मैं उनसे भी इस पर चर्चा करना चाहूंगी।' उन्होंने यह भी दोहराया कि वह पेशेवर मुक्केबाजी में हिस्सा लेना चाहती हैं। उन्होंने

कहा, 'मैंने अभी तक संन्यास नहीं लिया है लेकिन मैं हिस्सा लेना चाहती हूं। मैं मौके हासिल करने की कोशिश कर रही हूं, पेशवेर मुक्केबाजी में लड़ने के लिए अपने मौके का इंतजार कर रही हूं। मैं वापसी करना चाहती हूं।' मैरीकॉम ने कहा, 'मैं तीन-चार साल और जारी रह सकती हूं, यही मेरी इच्छा है। मेरे अंदर जुनून और भूख है और मैं जारी करना चाहती हूं।'

स्पेन के मलागा में खेले जाएंगे डेविस कप टेनिस के फाइनल आठ मुकाबले

लंदन। डेविस कप टेनिस के फाइनल आठ मुकाबले 19 से 24 नवंबर तक स्पेन के मलागा में खेले जाएंगे। इसमें गत विजेता इटली नॉकआउट चरण के पहले मैच में अर्जेंटीना से खेलेगी जबकि अमेरिकी टीम का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया से होगा। शीर्ष आठ देशों ने ग्रुप फाइनल से नॉकआउट चरण में प्रवेश किया है। अपने तीनों ग्रुप फाइनल मुकाबलों में विजेता रही इटली की टीम नॉकआउट चरणों के लिए अपनी टीम को बेहतर करने के प्रयास करेगी। उसके शीर्ष खिलाड़ी जैपनिक सिनर, ग्रुप चरण से बाहर थे पर वह अर्जेंटीना के खिलाफ होने वाले क्वार्टर फाइनल मुकाबले में वापसी कर सकते हैं। अर्जेंटीना ने ब्रिटेन और कनाडा जैसी जैसी टीमों के कठिन ग्रुप में जीत के साथ ही यहां तक का सफर तय किया है। वहीं अर्जेंटीना की टीम दो एकल मैच और एक युगल मैच में इटली पर जीत का प्रयास करेगी। एक अन्य मुकाबले में अमेरिकी टीम ऑस्ट्रेलिया का सामना करने तैयार रहेगी। ग्रुप फाइनल के दौरान दोनों टीमों के प्रमुख खिलाड़ी उपस्थित नहीं थे पर क्वार्टर फाइनल में वे नजर आ सकते हैं। वहीं एक अन्य क्वार्टर फाइनल में, मेजबान स्पेन और नीदरलैंड खेलेगी जबकि कनाडा का मुकाबला जर्मनी से होगा।

इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज के दौरे के लिए 14 सदस्यीय टीम घोषणा की, इन प्लेयर्स को मिली जगह

लंदन - इंग्लैंड ने जोस बटलर की अगुवाई में वेस्टइंडीज के दौरे के लिए अपनी सीमित ओवरों के लिए 14 सदस्यीय टीम घोषणा की है। बटलर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज से बाहर रहे थे। इंग्लैंड ने टी-20 सीरीज में बराबरी की थी और एकदिवसीय सीरीज में मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा था। बटलर की अनुपस्थिति में फिल सॉल्ट और हैरी ब्रूक ने क्रमशः टी-20 और एकदिवसीय टीमों की अगुआई की थी। आईसीसी की रिपोर्ट के अनुसार वेस्टइंडीज दौरे के लिए इंग्लैंड की टीम में लेग स्पिनर जाफर चौहान, जॉन टर्नर और डैन मूसली अनकैप्ड खिलाड़ी है। जॉन टर्नर और डैन मूसली ऑस्ट्रेलिया के साथ खेली गई सीरीज का हिस्सा थे, लेकिन उन्हें मैच नहीं खेलने का मौका मिला। इंग्लैंड 31 अक्टूबर से वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन एकदिवसीय और पांच टी-20 मैच खेलेगा।

वेस्टइंडीज दौरे के लिए इंग्लैंड की टीम

जोस बटलर (कप्तान), जोफा आर्चर, जैकब बेथेल, जाफर चौहान, सैम करन, विल जैक्स, लियाम लिविंगस्टोन, साकिब महमूद, डैन मूसली, जेमी ओवरटन, आदिल राशिद, फिल सॉल्ट, रीस टॉपली और जॉन टर्नर।

डाक्टर ने कर दिया था दौड़ने से मना, एथलीट ट्विंकल ने शानदार वापसी से ट्रैक पर बिखेरी चमक

नई दिल्ली (एजेंसी)। साहस, संकल्प और सहनशीलता, ये गुण एक खिलाड़ी को मजबूत बनाते हैं। एथलेटिक्स में चोट और जीत के बीच एक पतली रेखा होती है। शारीरिक फिटनेस की मांग गंभीर चोट का कारण बन सकती है। ऐसे में जहां कई खिलाड़ी हिम्मत हार जाते हैं, वहीं कुछ दृढ़ निश्चय के बदौलत मैदान में वापसी में वापसी कर और शानदार प्रदर्शन करते हैं। ऐसी ही अंतरराष्ट्रीय धावक हैं 26 वर्षीय ट्विंकल चौधरी।

पंजाब के जालंधर स्थित पटेल चौक की रहने वाली ट्विंकल को 2019 में एक रेस के दौरान पैर की हड्डी में चोट लग गई थी। एक साल तक उपचार चला। ट्विंकल ने जब चोट से उभर कर अभ्यास शुरू किया तो काफी दर्द था। धावक ने दर्द को एक चुनौती के रूप में सहन किया। छह महीने तक शरीर को मजबूत बनाया। फिर, दोबारा ट्रैक पर लौटीं और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक हासिल कर माता-पिता और जालंधर का नाम रोशन किया।

ट्विंकल ने बताया कि 2019 में उनके पैर के पिछले हिस्से की हड्डी में चोट लग गई थी। इसका उपचार उन्होंने दिल्ली के एक अस्पताल में करवाया। डाक्टर ने कहा, अब उनके लिए दौड़ना संभव नहीं होगा। ट्विंकल ने कहा उन्होंने हौसला नहीं छोड़ा। मन में ट्रैक पर वापसी का जज्बा था। एक वर्ष तक उपचार करवाने के लिए सप्ताह में एक बार दिल्ली जाती रहीं। डाक्टर की हर सलाह मानी। जब चोट 50 प्रतिशत ठीक हो गई थी तो धीरे-धीरे मैदान में अभ्यास करना शुरू किया। एक वर्ष तक किसी टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं लिया।

ट्विंकल ने कहा, जब खिलाड़ी खेल व मैदान से दूर हो जाता है तो ऐसा लगता है सब कुछ खत्म हो गया है। ऐसे समय में स्वयं को सकारात्मक और मजबूत रखना होता है। इसके लिए उन्होंने ध्यान लगाया। सीनियर कोच सर्बजीत सिंह हैप्पी अभ्यास करवाते रहे ताकि दोबारा चोट की शिकायत न आए। ट्विंकल ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार शानदार प्रदर्शन करते हुए गत फरवरी में बेंगलुरु में हुई ओपन नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 400 मी रिले रेस में स्वर्ण पदक, 800 मीटर में रजत पदक, 400 मीटर रिले में कांस्य पदक अपने नाम किया। उन्होंने रूस में हुई ब्रिक्स गेम्स में 800 मीटर रेस में देश का प्रतिनिधित्व किया।

विश्वकप का हर मैच अहम पर ऑस्ट्रेलिया को हराने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा : मंधाना

दुबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने कहा है कि टी20 विश्वकप में ऑस्ट्रेलियाई टीम को हराने के लिए सभी खिलाड़ियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। मंधाना के अनुसार उनकी टीम को लक्ष्य ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जीत दर्ज करना है पर ये आसान नहीं रहेगा। ऑस्ट्रेलियाई टीम ने अब तक तीन बार टी20 विश्व कप जीता है। साल 2020 में उसने फाइनल में भारत को हराया था। वहीं साल 2023 में दक्षिण अफ्रीका को फाइनल में हराया था। इस बार भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीमें एक ही ग्रुप में हैं। भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया से 13 अक्टूबर को खेलेगी। भारतीय टीम अपना पहला मुकाबला न्यूजीलैंड के खिलाफ 4 अक्टूबर को खेलेगी। वहीं उसका दूसरा मुकाबला पाकिस्तान से होगा। मंधाना ने न्यूजीलैंड के खिलाफ ग्रुप ए के पहले मैच से पहले कहा, 'विश्व कप का हर मैच महत्वपूर्ण होता है और सभी में सौ फीसदी देना होगा। वहीं न्यूजीलैंड और श्रीलंका भी काफी अच्छी हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तो कोई गलती की ही नहीं जा सकती।' उन्होंने कहा, 'हमें आस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। वह एक काफी अच्छी टीम है और उसे हराना बड़ी चुनौती है।' उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबला हमेशा जुनून से भरा होता है। भारत-पाक मुकाबला छह अक्टूबर को होगा। मंधाना ने कहा, 'भारत और पाक के मुकाबले में दोनों टीमों के समर्थकों में जुनून रहता है। वहीं ऐसा खिलाड़ी भी इससे कुछ हद तक प्रभावित होते हैं जिससे ये रोमांचक हो जाता है।' उन्होंने कहा, 'मेरे लिए विश्व कप का हर मैच महत्वपूर्ण है और हम सभी में अपनी ओर से पूरा प्रयास करेंगे।'

समाचार गेट
TITLE CODE : HARHIN11569

स्वामी (मुद्रक, प्रकाशक) रचीना यादव द्वारा साई प्रिंटिंग प्रेस, डी-85, सेक्टर-6, नोएडा 201301, उत्तर प्रदेश से मुद्रित करवाकर कार्यालय मकान नंबर 2, नियर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, बल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) से प्रकाशित किया। संपादक: कृष्णा शर्मा। संपादकीय कार्यालय: मकान नंबर 2, नियर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, बल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) पीआरपी एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा। कानूनी सलाहकार: बृहस्पत शर्मा, 9818180269, ईमेल : krishna24news@gmail.com

दिल्ली में डॉक्टर की गोली मारकर हत्या ; आप ने बढ़ते अपराध के लिए केंद्र और एलजी को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली। दिल्ली के जैतपुर में कालिंदी कुंज इलाके में एक निजी नर्सिंग होम में गुरुवार को एक डॉक्टर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान डॉ. जावेद अख्तर (55) के रूप में हुई है। वह नीमा अस्पताल में यूनानी डॉक्टर थे। पुलिस ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद जिला अपराध टीम और एफएसएल रोहिणी टीम घटनास्थल पर पहुंची। अस्पताल के कर्मचारियों ने पुलिस को बताया कि दो नाबालिग चिकित्सा केंद्र (मेडिकल फैसिलिटी) में आये और रात एक बजे ड्रेसिंग बदलने की मांग की। इन दोनों में से एक का एक दिन पहले पैर की चोट का इलाज हुआ था। कर्मचारियों ने बताया कि बाद में नाबालिगों ने कहा कि उन्हें दवा की पर्ची चाहिए और वे डॉ. जावेद अख्तर के केबिन में गए, जिसके बाद गोली चलने की आवाज आई। जब वे डॉक्टर के केबिन में पहुंचे तो उन्हें मृत पाया। नीमा अस्पताल के कंपाउंडर आबिद ने बताया कि डॉ. अख्तर के सिर में गोली लगी थी। पुलिस ने कहा कि यह लक्षित हत्या का मामला हो सकता है। संदिग्धों की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अभियान शुरू कर दिया गया है। इस बीच, आम आदमी पार्टी (आप) नेता सौरभ भारद्वाज ने केंद्र सरकार और उपराज्यपाल वीके सक्सेना पर निशाना साधते हुए कहा, ‘दिल्ली अपराध की राजधानी बन गई है। गैंगस्टर आसानी से काम कर रहे हैं। जबरन वसूली, गोलीबारी और रोजाना हत्याएं हो रही हैं। केंद्र सरकार और उपराज्यपाल दिल्ली के लिए अपने बुनियादी काम में विफल रहे हैं।’ सौरभ भारद्वाज ने आगे कहा, ‘दिल्ली में हर दिन गोलियां चल रही हैं। दिल्ली के उपराज्यपाल पूरी तरह से चुप हैं, न तो उन्होंने विधायकों से मिलने का समय दिया और न ही किसी पुलिस स्टेशन का दौरा किया। दिल्ली पुलिस केंद्र को रिपोर्ट करती है, दिल्ली सरकार को नहीं।’

दिल्ली : नारायणा इलाके के शोरूम में गोलीबारी के आरोप में किक-बॉक्सिंग खिलाड़ी गिरफ्तार

नई दिल्ली। । दिल्ली के नारायणा इलाके में पिछले महीने एक लग्जरी कार शोरूम में हुई गोलीबारी के सिलसिले में पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय किक-बॉक्सिंग खिलाड़ी को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि 26 वर्षीय दीपक ने लगातार तीन वर्षों तक अंतरराष्ट्रीय ‘जूनियर वैपियनशिप’ में स्वर्ण पदक जीता। पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) (अपराध) अमित गोयल ने बताया, ‘‘उसे खेल कोटे में भारतीय सेना में नौकरी मिल गई थी, लेकिन बाद में उसने नौकरी छोड़ दी। वह एक मान्यता प्राप्त वुशु कोच है और हरियाणा के रोहतक शहर में किक-बॉक्सिंग कोचिंग सेंटर संचालित करता है।’’ पुलिस ने बृहस्पतिवार की सुबह गोलीबारी में शामिल एक अन्य व्यक्ति अरमान खान (27) को भी उत्तर-पश्चिम दिल्ली के माजरा डबास से मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। नारायणा इलाके में 27 सितंबर को तीन लोगों ने जबरन वसूली के लिए एक लग्जरी कार शोरूम में गोलीबारी की थी। उनमें से एक आरोपी ने शोरूम के प्रबंधक के सिर पर पिस्तौल तान दी, जबकि बाकी दो ने दुकान के अंदर कई कारों और टीवी स्क्रीन पर ताबड़तोड़ गोलीबारी की। चौथा व्यक्ति दीपक शोरूम के बाहर अपना चेहरा छिपाकर निगरानी कर रहा था। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से दीपक की पहचान की और संक्षिप्त मुठभेड़ के बाद उसे रोहतक शहर से गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान दीपक ने बताया कि जब शोरूम मालिक ने रंगदारी देने से मना कर दिया तो उसने और उसके साथियों ने उसे व्यक्तिगत रूप से धमकाने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि 26 सितंबर को वे सभी रोहतक के एक होटल में मिले और हमले के बारे में विस्तार से चर्चा की। डीसीपी ने बताया कि घटना के बाद चारों अलग हो गए और दीपक पंजाब भाग गया। पुलिस ने वह नोटबुक भी बरामद कर ली है जिसका एक पन्ना फाड़कर धमकी भरा संदेश लिखा गया था और जिसे शोरूम में छोड़ दिया गया था।

विजेंद्र गुप्ता ने सौरभ भारद्वाज और आआपा पर बसों में तैनात मार्शलों की बहाली के मुद्दे पर निशाना साधा

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता विजेंद्र गुप्ता ने आज सौरभ भारद्वाज और आम आदमी पार्टी पर बसों में तैनात मार्शलों की बहाली के मुद्दे पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि विधानसभा में उपराज्यपाल से मिलने की बात कहकर आज कोई मंत्री नहीं पहुंचा। विजेंद्र गुप्ता ने एक वीडियो जारी कर कहा कि आम आदमी पार्टी और मंत्री सौरभ भारद्वाज ने खुद उपराज्यपाल से मिलने के लिए 3 अक्टूबर की तारीख चुनी थी। लेकिन जब समय आया तो मुख्यमंत्री, मंत्री, आम आदमी पार्टी के विधायक और सारे नेता सब गायब हो गये। सत्ता की कुर्सी के लिए जनता को बार-बार ठगने की आआपा की आदत बन चुकी है। इसलिए वह अब बस मार्शलों को धोखा दे रही है। विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि आम आदमी पार्टी झूठ बोलने का काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने 11 अक्टूबर 2023 को जिस पत्र को लिखकर आदेश जारी कर के दस हजार बस मार्शल को निकाल दिया उसपर अब राजनीति क्यों हो रही है। जब उन्होंने सदन में इस पत्र को पेश किया तब सौरभ भारद्वाज ने कुछ लाइनों को छोड़ कर के वह पत्र पढ़ा। गुप्ता ने कहा कि आआपा के नेता भी मानते है की इन्हें केजरीवाल के कहने पर हटाया गया है।

भाजपा दिल्ली प्रदेश के चार्टर्ड अकाउंटेंट सेल ने रक्तदान शिविर का किया आयोजन

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के चार्टर्ड अकाउंटेंट सेल ने गुरुवार को दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित हनुमान मंदिर के पास रक्तदान शिविर का आयोजन किया। दिल्ली भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने एक एक्स पोस्ट में कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश के चार्टर्ड अकाउंटेंट्स सेल द्वारा और 'रोटरी क्लब ऑफ दिल्ली वेस्ट' के सहयोग से हनुमान मंदिर, कनॉट प्लेस में आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया एवं सराहनीय सोच व कृत्य के लिए सभी साथियों का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान भाजपा के सीए सेल के संयोजक दीनदयाल अग्रवाल, रक्तदान शिविर के समन्वयक सीए सेल के राजेंद्र अरोड़ा और गगन कुमार मौजूद थे।

प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में दिल्ली भाजपा ने केजरीवाल सरकार के खिलाफ चलाया 'गड्ढों का पोल खोल अभियान'

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में आज दिल्ली सरकार की कथित नाकामियों के खिलाफ 'गड्ढों का पोल खोल अभियान' विभिन्न स्थानों पर चलाया गया। इस अभियान में दिल्ली के सभी भाजपा सांसदों ने भाग लिया। प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली के सड़कों की हालत बहुत खराब हो गई है जिससे प्रदेश के लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि चाहे आप चांदनी चौक जाएं, पुरानी दिल्ली स्टेशन जाएं या लाहौरी गेट जाएं, सड़कों की स्थिति एक जैसी ही है। यह दिवाली का मौसम है। इन सड़कों पर लोग रामलीला यात्रा निकाल रहे हैं। यह हालत कुछ दिनों में नहीं बल्कि अरविंद केजरीवाल के 10 साल के भ्रष्टाचार के शासन में हुए हैं। इस अवसर पर उनके साथ मौजूद सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि दिल्ली के बुनियादी ढांचे की बात की जाए तो यहां पर ऐसी जगह भी है जहां से एक छोटी गाड़ी भी नहीं निकल सकती। जब दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ये कहते है कि वह दिल्ली की सड़कों पर हुए गड्ढों का निरीक्षण कर रहें है तो ऐसा लगता है कि वह अपने दस साल के भ्रष्टाचार का प्रमाण दे रहे है। सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने पालम में गड्ढों की पोल खोल अभियान के अंतर्गत भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ विरोध प्रदर्शन किया।

बीजेपी का दावा, अपनी ही सरकार के खिलाफ जांच करवा रही 'आप', यह जनता को बेवकूफ बनाने की चाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा है कि यह बहुत ही हास्यास्पद है कि जिस डिस्कॉम कंपनी में दिल्ली सरकार की 49 फीसदी हिस्सेदारी दिल्ली सरकार की है उसका ऑडिट कराने का ड्रामा कर रहे हैं। मार्लेना सरकार बताए कि डिस्कॉम के खिलाफ जांच बैठाकर क्या वह अपने पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल या फिर स्वयं मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना के खिलाफ जांच करवा रही है क्योंकि उसमें बिजली मंत्री के नाते वह खुद इसमें शामिल थीं।

हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि आतिशी मार्लेना बताए कि आखिर डिस्कॉम के कर्मचारियों के पेंशन के लिए जो शेष है वह जनता से क्यों लिया जाना चाहिए, डिस्कॉम कंपनी को खुद इसको पे करना चाहिए। इसके अलावा भी कई ऐसे चार्ज बिजली बिल में ऐड होकर आते हैं जिसके कारण बिजली के बिल अधिक जमा करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि किसी का बिल यूनिट्स के अनुसार 100 रुपए का आना चाहिए तो शेष और अन्य चार्जेज मिलाकर यह 185 रुपए का आता है। लेकिन इन्हें आज ही ध्यान आया जबकि यह पिछले 10 सालों से मार्लेना सरकार का यह भ्रष्टाचार चल रहा है।

हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि बिजली के नाम पर करोड़ों रुपए का आज यह नया भ्रष्टाचार है जिसकी ऑडिट करने की बात खुद मार्लेना सरकार कर रही है। केजरीवाल सरकार और आतिशी की सरकार की भ्रष्टाचार के परते खुलनी शुरू हो गई हैं। इन लोगों ने डर की वजह से खुद ही पेंशन सेस जो बिजली के बिलों के जरिए आम जनता पर लगाया है उसके खिलाफ आज कहा है उसके इक्वारी ऑडिट करवाएंगे।

मल्होत्रा ने कहा कि यह सब सिर्फ जनता को बेवकूफ बनाने की चाल है ताकि दिल्ली की जनता के सामने अपने आप को पाक साफ बता सके। इसमें बहुत बड़ा भ्रष्टाचार है और इसमें से स्वंय दिल्ली के मुख्यमंत्री अतिशी शामिल हैं एवं अरविंद केजरीवाल भी शामिल थे। यह सब ड्रामा ठीक उसी प्रकार का है जैसे केजरीवाल जो कभी कहते थे क्यों ना तो बांग्ला लेंगे ना सिक्योरिटी लेंगे और ना ही गाड़ी लेंगे अब वह बंगलों में ही रहना चाहते हैं। इनको फालतू का ड्रामा करने की आदत है। 52 करोड रुपए इन्होंने सीएम आवास में सजावट के लिए लगाए इनका मन तो यह कर रहा था वहीं रह जाऊं लेकिन जो विधायक और नेता हैं, वह आज सब इनके खिलाफ हैं।

जया बच्चन सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी संसदीय समिति से अलग हुईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी (सपा) की राज्यसभा सदस्य जया बच्चन ने संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी पर संसदीय स्थायी समिति की सदस्यता छोड़ दी है जिसके अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद निशिकांत दुबे हैं।

राज्यसभा सचिवालय के एक बुलेटिन के अनुसार जया बच्चन अब कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई की अध्यक्षता वाली श्रम, वस्त्र और कौशल विकास पर संसदीय स्थायी समिति की सदस्य होंगी। श्रम पर संसदीय स्थायी समिति के सदस्य रहे तृणमूल कांग्रेस सांसद साकेत गोखले

अब जया बच्चन की जगह संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी संसदीय समिति में शामिल होंगे। राज्यसभा सदस्य ए ए रहीम (माकपा) और आर गिरिराजन, जो शशि थरूर की अध्यक्षता वाली विदेश मामलों की संसदीय समिति के सदस्य थे, अब आवास और शहरी मामलों की संसदीय समिति के सदस्य हैं। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने जनता दल (यूनाइटेड) के सदस्य संजय कुमार झा और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सदस्य धैर्यशील पाटिल को जल संसाधन पर विभाग संबंधी संसदीय स्थायी समिति का सदस्य नामित किया है। झा परिवहन, पर्यटन और संस्कृति पर संसदीय स्थायी समिति के भी अध्यक्ष हैं।

5 हजार करोड़ के इंटरनेशनल ड्रग्स केस में बड़ा खुलासा, मास्टरमाइंड के तार कांग्रेस से जुड़े

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने 5 हजार करोड़ रुपए के इंटरनेशनल ड्रग्स सिंडिकेट में चौंकाने वाला खुलासा किया। इस खुलासे ने राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है। मास्टरमाइंड तुषार गोयल का नाम सामने आया है, जो 2022 तक दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के आरटीआई सेल का चेयरमैन रह चुका है। गोयल की कांग्रेस से जुड़ी पृष्ठभूमि और ड्रग्स सिंडिकेट से जुड़े तार ने इस मामले को और भी संवेदनशील बना दिया है। स्पेशल सेल की पूछताछ में तुषार गोयल ने यह खुलासा किया कि वह कांग्रेस के आरटीआई सेल का प्रमुख था, और उसने अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल पर 'आरटीआई सेल चेयरमैन, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस' लिखा हुआ है। इसके अलावा, गोयल ने 'डिग्गी गोयल' के नाम से भी एक प्रोफाइल बनाई हुई है। जांच के दौरान, कई कांग्रेस नेताओं के साथ गोयल के फोटो भी सामने आए हैं। इस ड्रग्स सिंडिकेट के तार दुबई से जुड़े हुए पाए गए हैं। स्पेशल सेल की जांच में एक बड़े दुबई कारोबारी का नाम सामने आया है, जो कोकीन का प्रमुख सप्लायर है। यह जानकारी सामने आई है कि दुबई की 'डी' कंपनी ड्रग्स की खरीद-फरोख्त के लिए एक सेफ जोन के रूप में जानी जाती है और एजेंसियों को इस संबंध में पुख्ता जानकारी थी। इस मामले में मुंबई कनेक्शन भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि बड़ी मात्रा में कोकीन की खेप मुंबई भेजी जा रही थी। स्पेशल सेल की टीम अब इस एंगल पर भी जांच कर रही है कि मुंबई में ड्रग्स यूजर्स कौन थे। इसे किन हाई-प्रोफाइल लोगों को सप्लाई किया जाना था। स्पेशल सेल इस इंटरनेशनल ड्रग्स सिंडिकेट की जड़ तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। बता दें कि बुधवार को दिल्ली पुलिस ने ड्रग्स की अब तक की बड़ी खेप पकड़ी। अधिकारियों के अनुसार, 560 किलोग्राम से अधिक कोकीन और 40 किलोग्राम 'हाइड्रोपोनिक मारिजुआना' जब्त किया गया। जब्त किए गए ड्रग्स की अनुमानित कीमत लगभग 5,620 करोड़ रुपए है। स्पेशल सेल टीम ने महिपालपुर से चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। गोयल इस अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स गिरोह का प्रमुख वितरक बताया जा रहा है। 1 अक्टूबर को महिपालपुर में एक गोदाम के बाहर सबको गिरफ्तार किया गया, जहां 22 कार्टन में 547 किलोग्राम कोकीन और 40 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक मारिजुआना मिला।

दिल्ली में नहीं रहेगा कर्फ्यू, सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के बाद आदेश जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के बाद दिल्ली में कर्फ्यू हटा दिया गया है। राज्य में 30 सितंबर से पांच अक्टूबर तक कर्फ्यू लगाया गया था जिसके बाद अब इस आदेश को वापस ले लिया गया है। आदेश में पांच लोगों को एक जगह इकट्ठा होने पर प्रतिबंध लगा हुआ था। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने यह बात चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली पीठ को उस समय बताई जब दिल्ली पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा द्वारा पारित आदेश से संबंधित मामला तत्काल सूचीबद्ध किये जाने के लिए उल्लेखित किया गया।

पुलिस कमिश्नर ने वापस लिया आदेश

प्रधान न्यायाधीश ने वरिष्ठ अधिवक्ता मेनका गुरुस्वामी से कहा, 'सॉलिसिटर जनरल का कहना है कि पुलिस कमिश्नर का आदेश वापस ले लिया गया है।' मेनका गुरुस्वामी ने ही मामले को तत्काल सूचीबद्ध करने का अनुरोध किया था। पुलिस आयुक्त द्वारा जारी आदेश में 30 सितंबर से 5 अक्टूबर तक पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने, आग्नेयास्त्र, बैनर, तख्तियां आदि लेकर चलने, किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र में धरना देने पर रोक लगाई गई थी। इसमें कई संगठनों द्वारा विरोध प्रदर्शन के आह्वान सहित कानून और व्यवस्था के मुद्दों का हवाला दिया गया था। गुरुस्वामी ने पीठ के समक्ष मामले का उल्लेख किया।

त्योहारों के बीच आदेश जारी

पीठ में न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि पुलिस आयुक्त द्वारा पारित आदेश दशहरा के मद्देनजर अभी शहर को प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि आदेश के कारण रामलीला नहीं हो सकती और यह आदेश दुर्गा पूजा उत्सव को भी प्रभावित करता है। पीठ ने शुरू में कहा, ''दिल्ले उच्च न्यायालय जाए।' मेहता ने अदालत को सूचित किया कि इसी तरह के मुद्दे को उठाने वाली याचिकाएं आज दिन में उच्च न्यायालय के समक्ष सुनवाई के लिए आने वाली हैं। सीजेआई ने गुरुस्वामी को बताया कि वरिष्ठ विधि अधिकारी ने कहा है कि आदेश वापस ले लिया गया है। पुलिस के एक अधिकारी के अनुसार, पुराना आदेश 2 और 3 अक्टूबर की मध्य रात्रि को समाप्त हो गया है।

दिल्ली के कई इलाकों में लगाई गई थी धारा 163

दिल्ली पुलिस मुख्यालय से जारी पहले के आदेश के अनुसार, पुलिस कमीश्नर ने नई दिल्ले, उत्तर और मध्य जिलों तथा अन्य राज्यों की सीमा से लगे सभी पुलिस थानों के अधिकार क्षेत्र में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 (जो पहले सीआरपीसी की धारा 144 थी) लागू करने का निर्देश दिया था। आदेश में कहा गया था, ''प्रस्तावित वक्फ संशोधन विधेयक तथा सदर बाजार क्षेत्र में शाही ईदगाह के मुद्दे, एमसीडी स्थायी समिति चुनाव के राजनीतिक रूप से उत्तेजित मुद्दे तथा हुसू चुनाव के परिणामों की घोषणा सहित विभिन्न मुद्दों के कारण दिल्ली सामान्य माहौल कानून-व्यवस्था की दृष्टि से संवेदनशील है।' आदेश में कहा गया था, ''इसके अलावा, महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर को नई दिल्ली तथा मध्य जिले के क्षेत्रों में वीवीआईपी तथा गणमान्य व्यक्तियों की भारी आवाजाही रहेगी।' पहले के आदेश में आगे कहा गया था कि जम्मू कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव जारी है, इसलिए दिल्ली की सीमाओं से लोगों और वाहनों की आवाजाही पर निरंतर जांच की आवश्यकता है।

धोखाधड़ी के मामले एल्विश यादव की बढ़ी मुश्किलें, पुलिस ने भारती समेत 5 लोगों को किया तलब

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूट्यूबर एल्विश यादव की मुश्किलें दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई नजर आ रही है। कभी रेव पार्टी में सांप के जहर सप्लाई करने के आरोप में तो कभी धोखाधड़ी के मामले में मुश्किलें बढ़ती जा रही है। इस बीच दिल्ली पुलिस ने 500 करोड़ की धोखधड़ी के आरोप में एल्विश यादव और कॉमेडियन भारती सिंह समेत तीन लोगों को तलब किया है। गुरुवार को अधिकारी ने बताया कि पुलिस को 500 से अधिक शिकायतें मिलीं, जिनमें आरोप लगाया गया कि कई सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर और यूट्यूबर ने अपने पेज पर हायबॉक्स मोबाइल ऐप को बढ़ावा दिया और लोगों को ऐप के जरिए निवेश का प्रलोभन दिया।

ऐप में 30 हजार से अधिक लोगों ने किया निवेश

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मामले के मुख्य आरोपी चेन्नई निवासी शिवराम (30) को गिरफ्तार कर लिया गया है। शिकायत के अनुसार, सौरव जोशी, अभिषेक मल्हान, पूरव झा, एल्विश यादव, भारती सिंह, हर्ष लिंबाचिया, लक्ष्य चौधरी, आदर्श सिंह, अमित और दिलराज सिंह रावत सहित सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर और यूट्यूबर ने ऐप को बढ़ावा दिया और लोगों को ऐप के जरिए निवेश करने का प्रलोभन दिया। पुलिस उपायुक्त (आईएफएसओ स्पेशल सेल) हेमंत तिवारी ने बताया, ''हायबॉक्स एक मोबाइल ऐप है जो एक सुनियोजित धोखाधड़ी का हिस्सा था।' डीसीपी ने कहा कि इस ऐप के माध्यम से, आरोपियों ने प्रतिदिन एक से पांच प्रतिशत के गारंटीड रिटर्न का वादा किया था, जो एक महीने में 30 से 90 प्रतिशत तक होता। ऐप को फरवरी 2024 में शुरू किया गया था। ऐप के जरिये 30,000 से अधिक लोगों ने पैसा निवेश किया।

इस मामले पर दिल्ली पुलिस ने क्या कहा

शुरुआती पांच महीनों के दौरान निवेशकों को उच्च रिटर्न मिला। हालांकि, जुलाई से ऐप ने तकनीकी गड़बड़ियों, कानूनी मुद्दों, जीएसटी मुद्दों का हवाला देते हुए भुगतान रोक दिया। डीसीपी तिवारी ने कहा, ''कथित कंपनियां उत्तर प्रदेश के नोएडा में अपना कार्यालय बंद करने के बाद गायब हो गईं।' पुलिस अधिकारियों ने बताया कि धोखाधड़ी के सरगना शिवराम को गिरफ्तार कर लिया गया और उसके चार अलग-अलग बैंक खातों से 18 करोड़ रुपये जब्त किए गए हैं। पुलिस को 16 अगस्त को इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस (आईएफएसओ) में हायबॉक्स ऐप के खिलाफ 29 पीड़ितों की शिकायतें मिलीं। शिकायतकर्ताओं ने आरोप लगाया कि उन्हें उनके निवेश पर उच्च रिटर्न का वादा किया गया था। स्पेशल सेल ने 20 अगस्त को भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत एक प्राथमिकी दर्ज की।

500 से अधिक शिकायतें मिलीं

जांच के दौरान, नौ लोगों द्वारा हायबॉक्स ऐप के खिलाफ कई शिकायतें दर्ज कराई गईं, जिनके साथ इसी तरह धोखाधड़ी की गई थी। इन नौ मामलों को आईएफएसओ को सौंप दिया गया। पुलिस को पूर्वोत्तर जिले, बाहरी जिले, शाहदरा और 'नेशनल साइबरक्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल' से 500 से अधिक शिकायतें मिलीं। डीसीपी ने कहा, ''हमारी टीम ने धोखाधड़ी में शामिल भुगतान गेटवे और बैंक खातों का विवरण एकत्र किया। लेन-देन के विश्लेषण से टीम को चार खातों की पहचान करने में मदद मिली, जिनका इस्तेमाल ठगी की गई रकम को निकालने के लिए किया गया था।' पुलिस अधिकारियों ने कहा कि आज तक 127 शिकायतों को एक साथ जोड़ दिया गया है और इंजबज और फोनपे की भूमिका की जांच की जा रही है, क्योंकि हायबॉक्स का संचालन करने वाले धोखेबाजों के कारोबारी खाते उचित सत्यापन प्रक्रिया का पालन किए बिना और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के निर्धारित मानदंडों को दरकिनार कर खोले गए थे।

अस्पताल में डॉक्टर को गोली मारने पर आप ने केंद्र सरकार को घेरा, एलजी को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली। कोलकाता के बाद दिल्ली में भी एक डॉक्टर की सरेआम अस्पताल में गोलियों से भूनकर हत्या कर दी गई है। इस मामले पर राजनीति गरमाने लगी है। इस घटना को लेकर दिल्ली के मंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) नेता सौरभ भारद्वाज ने गुरुवार को सोशल मीडिया पर अस्पताल परिसर के अंदर एक डॉक्टर की गोली मारकर हत्या की घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार और दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के.सक्सेना की प्रशासनिक विफलता के कारण यह चौंकाने वाली घटना हुई और राष्ट्रीय राजधानी में बढ़ते अपराध के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने एक्स हैंडल पर पोस्ट किया, 'दिल्ली अपराध की राजधानी बन गई है - गैंगस्टर आसानी से काम कर रहे हैं, जबरन वसूली के लिए कॉल और गोलीबारी हो रही है और रोजाना हत्याएं हो रही हैं। केंद्र सरकार और @LtGovDelhi दिल्ली के लिए अपने बुनियादी काम में विफल रहे हैं।' दिल्ली पुलिस के मुताबिक, कालिंदी कुंज थाना क्षेत्र के जैतपुर स्थित नीमा अस्पताल में एक डॉक्टर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आरोपियों की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज और विजुअल की जांच की जा रही है। अस्पताल के कर्मचारियों के अनुसार, दो व्यक्ति घायल अवस्था में अस्पताल आए थे; मरहम-पट्टी करने के बाद उन्होंने डॉक्टर से मिलने की मांग की और उनके केबिन में घुसते ही उन्हें गोली मार दी। इस बीच, पुलिस मामले की जांच कर रही है और संदिग्धों की तलाश में अभियान शुरू कर दिया है। आप के सौरभ भारद्वाज ने पहले भी राष्ट्रीय राजधानी में बढ़ते अपराध और गैंगस्टर प्रभाव का मुद्दा उठाया था। दिल्ली के मंत्री ने 2 अक्टूबर को एक्स पर पोस्ट किया, 'दिल्ली के अंदर गैंगस्टरों का बोलबाला बढ़ गया है। 15 दिन पहले ग्रेटर कैलाश के एक जिम मालिक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। 24 घंटे में तीन प्रमुख जगहों पर गोलियां चलीं और सभी के पास फिरौती के लिए कॉल आए। यहां तक ??कि आप विधायक संजीव झा और अजय दत्त को भी गैंगस्टरों ने फिरौती के लिए धमकाया है। जिस जगह पर एक दिन पहले गोलियां चलीं, वहां उन्हें पिछले छह महीने से धमकियां मिल रही थीं। उन्होंने एफआईआर भी दर्ज कराई, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की।' इससे पहले दिन में दिल्ली के विधायकों ने एलजी को पत्र लिखकर दिल्ली में व्यापारियों से जबरन वसूली की बढ़ती घटनाओं पर चिंता जताई थी। उन्होंने एलजी से तत्काल मुलाकात की मांग की है।

दिल्ली की बदहाल सड़कों और प्रदूषण के लिए केजरीवाल जिम्मेदार: दुष्यंत गौतम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव दुष्यंत कुमार गौतम ने गुरुवार को विवेक विहार न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी अंडरपास का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने दिल्ली की सड़कों की दयनीय स्थिति और बढ़ते प्रदूषण के लिए पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को जिम्मेदार ठहराया। खास बात ये रही कि वो अपने साथ केजरीवाल का कटआउट लेकर पहुंचे। जिसमें लिखा था 'कट्टर भ्रष्टाचारी'।

दुष्यंत कुमार गौतम ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर टूटी हुई सड़कों का निरीक्षण किया और कहा कि यह सब केजरीवाल की नाकामी का परिणाम है।

भाजपा नेता ने कहा, "जिस प्रकार से सड़कें टूटी हैं, पॉल्यूशन फैल रहा है, गंदगी फैल रही है, इसके लिए सिर्फ और सिर्फ केजरीवाल जिम्मेदार हैं। अरविंद केजरीवाल ने न तो कोई नया स्कूल बनाया है, न ही अस्पताल, और न ही कोई विकास कार्य किया है। केजरीवाल ने केवल दिल्ली को लूटने का काम किया है।"

उन्होंने लोगों से अपील की कि वे आगामी चुनाव में अपने वोट का सही इस्तेमाल करें और केजरीवाल को हटाकर भाजपा को चुनें। उन्होंने कहा, "आज परिवर्तन का समय है। दिल्ली को एक सक्षम और विकासशील सरकार की आवश्यकता है, और भाजपा ही वह पार्टी है जो दिल्ली का विकास सुनिश्चित कर सकती है। इसलिए, मैं लोगों से निवेदन करूंगा कि अपने वोट का इस्तेमाल करके इस भ्रष्टाचारी केजरीवाल को हटाकर भाजपा को चुनने का काम करें। ताकि, दिल्ली में डबल इंजन की सरकार हो और दिल्ली का विकास सुनिश्चित हो सके।

उन्होंने कहा कि अगर भाजपा सत्ता में आती है, तो दिल्ली में विकास की नई गाथा लिखी जाएगी। दिल्ली का विकास भाजपा के साथ ही संभव है, इसलिए केजरीवाल को हटाना आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा ने अच्छी सड़कें और हाईवे देने का काम किया।

बता दें कि दिल्ली में आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए भाजपा और आम आदमी पार्टी दोनों इन दिनों जनता के बीच है। एक तरफ केजरीवाल जनता के बीच जाकर यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्होंने ईमानदारी से दिल्ली की जनता के लिए काम किया है। वहीं दूसरी तरफ भाजपा लोगों के बीच जाकर केजरीवाल की नाकामियों को उजागर कर रही है।